भारतीय वैश्विक परिषद

समाचार पत्रक

सप्रू हाउस

अंक : 40 जनवरी - मार्च 2025

मान्ननीय श्री अरारत मिर्जोयान, विदेश मंत्री, आर्मेनिया द्वारा 52वां सप्रू हाउस व्याख्यान, 10 मार्च 2025

मुख्य बातें

'पाकिस्तान में जारी संकट का आकलन' पर पैनल चर्चा, 15 जनवरी 2025

'उभरता भारत: अमृतकाल में विदेश नीति' विषय पर परिषद का दूसरा युवा सम्मेलन, 11 मार्च 2025

'हिंद– प्रशांत में गैर– परंपरागत चुनौतियां: क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा स्थिति को फिर से परिभाषित करना और सहयोग को बढ़ावा देना' विषय पर पैनल चर्चा, 28 फरवरी 2025

'आखिरकार कमजोर पड़ जाना? 2025 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और गतिशीलता पर पुनर्विचार' विषय पर पैनल चर्चा, 26 मार्च 2025

शंघाई सहयोग संगठन के महासचिव महामहिम श्री नूरलान येरमेकबायेव द्वारा 51वां सप्रू हाउस व्याख्यान, 6 फरवरी 2025

परिषद के प्रकाशन

विषय-सूची

'पाकिस्तान में जारी संकट का आकलन' पर पैनल चर्चा, 15 जनवरी 2025 6

'दक्षिण चीन सागर में तनाव में वृद्धि: सहयोग का रास्ता?' पर पैनल चर्चा, 21 जनवरी 2025 7

क्षेत्रीय निदेशक डॉ. जेम्स गोमेज़ और एशिया सेंटर, बैंकॉक के प्रोग्राम मैनेजर श्री संजय गाठिया ने आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया, 22 जनवरी 2025 7

प्रो. के. वारिकू द्वारा रचित पुस्तक 'द क्रॉसरोड्स: कश्मीर – इंडियाज़ ब्रिज टू शिंजियांग' पर चर्चा, 23 जनवरी 2025 8

7वां आईसीडब्ल्यूए– एशिया न्यूज़ीलैंड फाउंडेशन (एएनज़ेडएफ/ ANZF) और न्यूज़ीलैंड एंड इंडिया रीसर्च इंस्टीट्यूट (एनज़ेडआईआरआई/NZIRI) ट्रैक 1.5 संवाद, क्राइस्टचर्च, न्यूज़ीलैंड, 30–31 जनवरी 2025 8

'भविष्य की रूपरेखा: अंटार्कटिक शासन और अन्वेषण में भारत की उभरती भूमिका' पर पैनल चर्चा, 4 फरवरी 2025 10

आईसीडब्ल्यूए और प्रिंस सऊद अल फैसल इंस्टीट्यूट ऑफ डिप्लोमैटिक स्टडीज़ (पीएसएआईडीएस) के बीच 9वां भारत–सऊदी अरब वार्ता, रियाद, सऊदी अरब, 5 फरवरी 2025 10

शंघाई सहयोग संगठन के महासचिव महामहिम श्री नूरलान येरमेकबायेव द्वारा 51वां सप्रू हाउस व्याख्यान, 6 फरवरी 2025
सीएससीएपी बैठक, बैंकॉक, थाईलैंड, 6 फरवरी 2025 11

सीएससीएपी बैठक, बैंकॉक, थाईलैंड, 6 फरवरी 2025 12

जनकपुर साहित्य महोत्सव, जनकपुर, नेपाल, 6-8 फरवरी 2025 13

यूरोपीय संघ द्वारा सह– वित्तपोषित जीन मोनेट मॉड्यूल के तहत जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के यूरोपीय अध्ययन केंद्र में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, 7–9 फरवरी 2025 14

मंगोलिया के असाधारण एवं पूर्णाधिकारी राजदूत महामहिम श्री गनबोल्ड डंबजाव का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 11 फरवरी 2025 15

सुश्री मारिजा रौस, सिल्क रूट्स (दक्षिण और पश्चिम एशिया) की प्रमुख, इंटरनेशनल सेंटर फॉर माइग्रेशन पॉलिसी डेवलपमेंट (आईसीएमपीडी) (आईसीडब्ल्यूए का एमओयू पार्टनर) का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 12 फरवरी 2025 15

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्याय के राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन के विशेष केंद्र (एससीएनएसएस/ SCNSS) में विशेष व्याख्यान, 12 फरवरी 2025 16

दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, 13 फरवरी 2025 16

'बांग्लादेश में वर्तमान अस्थिरताः इसका इतिहास फिर से लिखना या अप्रत्याशित भविष्य की रूपरेखा तैयार करना?' पर पैनल चर्चा, 14 फरवरी 2025 17

8वीं हिंद महासागर सम्मेलन– 'समुद्री साझेदारी के नए क्षितिज का सफ़र' विषय पर आईओसी 2025, मस्कट, ओमान, 16–17 फरवरी 2025 18

‘उप– क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ानाः भारत की पड़ोस प्रथम नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम’ विषय पर पैनल चर्चा, 18 फरवरी 2025 19

श्री उपेन्द्र एस. बघेल, पूर्व आईपीएस अधिकारी द्वारा संवाद, 21 फरवरी 2025 20

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ संवाद, 25 फरवरी 2025 20

भारतीय दूतावास, अंकारा (तुर्कीय), राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अनुसंधान फाउंडेशन (एसईटीए) और भारत– पश्चिम एशिया वार्ता केंद्र (सीआईडब्ल्यूएडी), अंकारा, तुर्कीय द्वारा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 26–27 फरवरी 2025 21

आईसीडब्ल्यूए– जीआईएसआर, कतर (ग्लोबल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक रीसर्च) सेमिनार, 27 फरवरी 2025 21

सेजोंग इंस्टीट्यूट और भारतीय दूतावास, सियोल, दक्षिण कोरिया द्वारा ‘भविष्य को जोड़नाः कोरिया– भारत संबंधों में नए क्षितिज तलाशना’ पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 27 फरवरी 2025 23

‘हिंद– प्रशांत में गैर– परंपरागत चुनौतियां: क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा स्थिति को फिर से परिभाषित करना और सहयोग को बढ़ावा देना’ विषय पर पैनल चर्चा, 28 फरवरी 2025 23

वियतनाम विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के साथ बातचीत, 03 मार्च 2025 24

इंडियन ओशन रिम एकेडमिक ग्रुप (आईओआरएजी/ IORAG) की ‘समुद्री डोमेन जागरूकता’ पर कार्यशाला, कोलंबो, श्रीलंका, 05 मार्च 2025 24

माननीय श्री अरारत मिर्जोयान, विदेश मंत्री, आर्मेनिया द्वारा 52वां सप्रू हाउस व्याख्यान, 10 मार्च 2025 25

सीएससीएपी (CSCAP) बैठक, सिंगापुर, 10–11 मार्च 2025 26

‘उभरता भारत: अमृतकाल में विदेश नीति’ विषय पर आईसीडब्ल्यूए का दूसरा युवा विद्वान सम्मेलन, 11 मार्च 2025 26

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग के विशेष सचिव श्री वी. श्रीनिवास और प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग (डीएआरपीजी/DARPG) और पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग (डीओपीपीडब्ल्यू) के सचिव का आईसीडब्ल्यूए का दौरा, 11 मार्च 2025 28

न्यूज़ीलैंड में एमओयू साझीदारों एएनज़ेडएफ– एनज़ेडआईआरआई और आईसीडब्ल्यू के शोध संकाय के प्रतिनिधिमंडल के बीच संवादात्मक सत्र, 17 मार्च 2025 29

सुश्री ओल्हा वोरोज़बीट, विशेषज्ञ, यूक्रेनियन प्रिज़्म और अतिथि शिक्षक, यूक्रेनियन कैथलिक यूनिवर्सिटी (लविव, यूक्रेन) द्वारा संवाद, 17 मार्च 2025 29

महामहिम राजदूत कैरात सरीबे, महासचिव, कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरैक्शन एंड कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेशर्स इन एशिया (सीआईसीए) का आईसीडब्ल्यूए का दौरा, 18 मार्च 2025 30

डॉ. सईद खतीबजादेह, अध्यक्ष, राजनीतिक एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (आईपीआईएस), ईरान, का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 18 मार्च 2025 30

आईसीडब्ल्यूए– सीएमआई (मार्टी अहितसारी पीस फाउंडेशन), फिनलैंड गोलमेज़ चर्चा, 19 मार्च 2025 31

डॉ. ग्लैडेन पप्पिन– अध्यक्ष, हंगेरियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (एचआईआईए/HIIA) द्वारा वार्ता, 19 मार्च 2025 32

बर्लिन में जर्मन उद्योग महासंघ (बीडीआई) की अंतरराष्ट्रीय बाजार की वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री सुज़ाना मिनाटो– टार्कलर का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 19 मार्च 2025 32

8वीं आईसीडब्ल्यूए– आरआईएसी (रशन इंटरनेशनल अफेयर्स काउंसिल) वार्ता, 20 मार्च 2025 33

जापान इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (जेआईआईए) के शोध अध्येता श्री यूइची योशिदा के साथ बातचीत, 21 मार्च 2025 35

एमआईटी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट (एमआईसी एसओजी) पुणे से राजनीतिक नेतृत्व और सरकार (एमपीजी 20) में मास्टर प्रोग्राम के 20वें बैच के साथ संवाद, 21 मार्च 2025 35

आर्मेनिया के एप्लायड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एपीआरआई, आर्मेनिया) के विद्वानों के साथ संवाद, 21 मार्च 2025 36

डॉ. पैट्रिक कुगिएल, वरिष्ठ विश्लेषक, पीआईएसएम पोलैंड और वारसॉ यूनिवर्सिटी में व्याख्याता और सुश्री माल्गोरज़ाटा वेजिस– गोलेबियाक, निदेशक, पोलिश इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 21 मार्च 2025 36

'म्यांमार नैरेटिव' विचार मंच द्वारा '2025 से आगे म्यांमार: बहुध्रुवीय विश्व में चुनौतियां और अवसर' पर अंतरराष्ट्रीय चर्चा, नेपीताव, म्यांमार, 21 मार्च 2025 37

भारत में पोलैंड के मिशन प्रमुख डॉ. पिओट्र एंटोनी स्वितल्स्की का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 24 मार्च 2025 37

जॉर्डन के राजदूत, महामहिम श्री युसुफ मुस्तफा अली अब्देल गनी, का, आईसीडब्ल्यूए दौरा, 24 मार्च 2025 38

'हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में नीली अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को उज़ागर करनाः आईओआरए के लिए भविष्य की राह' विषय पर गोलमेज़ चर्चा, 25 मार्च 2025 38

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) और क्रिस्तु जयंती कॉलेज (केजेसी/ KJC) के बीच समझौता ज्ञापन का निष्कर्ष, 25 मार्च 2025 39

'आखिरकार कमजोर पड़ जाना? 2025 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और गतिशीलता पर पुनर्विचार' विषय पर पैनल चर्चा, 26 मार्च 2025 39

आउटरीच कार्यक्रम 41

आईसीडब्ल्यूए में शोध प्रशिक्षु 58

प्रकाशन 59

भारत त्रैमासिक– संपादकीय 62

पाकिस्तान में जारी संकट का आकलन' पर पैनल चर्चा, 15 जनवरी 2025

15 जनवरी 2025 को, आईसीडब्ल्यूए ने सप्रू हाउस में 'पाकिस्तान में जारी संकट का आकलन' शीर्षक से एक पैनल चर्चा आयोजित की। इस चर्चा की अध्यक्षता जॉर्डन और लीबिया में भारत के पूर्व राजदूत और माल्टा में उच्चायुक्त राजदूत अनिल त्रिगुणायत ने की। इस कार्यक्रम के पैनलिस्ट श्री तिलक देवाशर (लेखक और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड, भारत के सदस्य), प्रो. अजय दर्शन बहेरा (अकादमी ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, ज़ामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली) और डॉ. शालिनी चावला (सेंटर फॉर एयर पावर स्टडीज़, नई दिल्ली की प्रतिष्ठित फेलो) थे। नूतन कपूर महावर (अपर सचिव, आईसीडब्ल्यूए) ने स्वागत भाषण दिया।

राजदूत त्रिगुणायत ने कहा कि पाकिस्तान अपने नागरिकों की रक्षा करने में विफल रहा है। वर्ष 2024 अपने स्वयं के नुकसान, हमलों की संख्या और पड़ोसियों, विशेष रूप से अफगानिस्तान के साथ समस्याओं के संदर्भ में वर्ल्ड ईयर था। आज के पाकिस्तान को निरंतर सत्ता संघर्ष, मानवाधिकारों के उल्लंघन और राजनेताओं द्वारा जन कल्याण के लिए किसी भी वास्तविक प्रतिबद्धता के प्रति अरुचि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विदेश नीति के क्षेत्र में, पाकिस्तान के पास एक निश्चित प्रकार का उपद्रव मूल्य रहा है, जहाँ वह सभी महाशक्तियों के साथ अपने लाभ के लिए इसका लाभ उठाने में सक्षम था। श्री देवाशेर ने कहा कि 2025 में प्रवेश करते हुए पाकिस्तान को अनेक प्रकार की समस्याओं और संकटों का सामना करना पड़ेगा लेकिन दिलचस्प बात यह है कि शायद ही कोई ऐसा समय रहा हो जब पाकिस्तान को संकटों का सामना न करना पड़ा हो।

देश ने पहले कभी एक साथ इतनी गंभीर समस्याओं का सामना नहीं कियाः राजनीतिक संकटों की एक श्रृंखला, अस्थिर अर्थव्यवस्था और बद से बदतर होती सुरक्षा स्थिति। अतीत में पाकिस्तान अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाता था; आज जिस वैश्विक माहौल में पाकिस्तान का संकट सामने आ रहा है, वह अस्थिर है, भू– राजनीतिक तनाव बढ़ रहे हैं। अमेरिका– चीन प्रतिस्पर्धा, यूक्रेन और मध्य पूर्व में युद्धों पर प्रमुख शक्तियों का ध्यान और डोनाल्ड ट्रम्प के आसन्न दूसरे कार्यकाल के कारण अनिश्चितता।

प्रो. बेहरा ने कहा कि पाकिस्तान की राजनीतिक व्यवस्था बहुत अलग है। सेना की भूमिका के कारण इसे समझना बहुत मुश्किल है। इमरान खान का कारक जिसने व्यवस्था को चुनौती दी है, वह नया है। इसका नागरिक सैन्य संबंधों पर प्रभाव पड़ रहा है। दशकों से चली आ रही सेना का प्रभुत्व पर अब सवाल उठ रहे हैं। खान के पास न तो पाकिस्तान के मुद्दों का समाधान है, न ही कोई सुसंगत नज़रिया या नीति तथापि उनकी बयानबाज़ी एवं तरीके, आबादी के एक बड़े हिस्से को प्रेरित करने में सहायक रहे हैं। डॉ. चावला ने कहा कि वर्तमान में पाकिस्तानी राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उसने दशकों से यह कहानी गढ़ी है कि यह एक ऐसा देश है जिसका असफल होना बहुत खतरनाक है– 'दुनिया पाकिस्तान को असफल होने नहीं दे सकती'– और संकट के इस दौर ने उस विश्वास को चुनौती दी है। सभी शक्तिशाली सेना पर इमरान खान जैसे नागरिक राजनीतिक अभिनेताओं के साथ– साथ टीटीपी और बीएलए जैसे समूहों द्वारा हमला किया जा रहा है, जो बीते सात दशकों से इसकी भूमिका और स्थिति को कमज़ोर कर रहा है।

‘दक्षिण चीन सागर में बढ़ते तनावः सहयोग का रास्ता?’ पर पैनल चर्चा, 21 जनवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 21 जनवरी को सप्रू हाउस में ‘दक्षिण चीन सागर में बढ़ते तनावः सहयोग का रास्ता?’ पर पैनल चर्चा का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन के प्रतिष्ठित फेलो और चीन में भारत के पूर्व राजदूत रहे अशोक कंठ ने की। पैनल में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ के पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र के प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली; श्री लुसियो इल पिट्लो, अध्यक्ष, फिलीपीन एसोसिएशन फॉर चाइनीज़ स्टडीज़; शोध अध्येता, एशिया पेसेफिक पाथवेज़ टू प्रोग्रेस फाउंडेशन इंक.; और डॉ. राहुल मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, सेंटर फॉर इंडो– पेसेफिक स्टडीज़, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, जवाहरलालनेहरू विश्वविद्यालय, थे। चर्चा में, स्वागत भाषण आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने दिया।

क्षेत्रीय निदेशक डॉ. जेम्स गोमेज़ और एशिया सेंटर, बैंकॉक के प्रोग्राम मैनेजर श्री संजय गाठिया ने आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया, 22 जनवरी 2025

क्षेत्रीय निदेशक डॉ. जेम्स गोमेज़ और एशिया सेंटर, बैंकॉक के प्रोग्राम मैनेजर श्री संजय गाठिया ने आईसीडब्ल्यूए का शिष्टाचार दौरा किया और आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर जी से मुलाकात की। उन्होंने आसियान देशों में अपने संस्थान के काम के बारे में जानकारी साझा की और आईसीडब्ल्यूए के साथ भविष्य के सहयोग के संभावित अवसरों पर बात की।

प्रो. के. वारिकू द्वारा रचित पुस्तक 'द क्रॉसरोड्स: कश्मीर – इंडियाज़ ब्रिज टू शिंजियांग' पर चर्चा, 23 जनवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 23 जनवरी 2025 को सप्रू हाउस में हिमालयन एंड सेंट्रल एशियन स्टडीज़ के संपादक प्रोफेसर के. वारिकू की पुस्तक 'द क्रॉसरोड्सः कश्मीर– इंडियाज़ ब्रिज टू शिंजियांग' पर चर्चा आयोजित की। इसकी अध्यक्षता पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त रहे राजदूत टी.सी.ए. राघवन ने की। श्री जयदेव रानाडे, अध्यक्ष, सेंटर फॉर चाइना एनालिसिस एंड स्ट्रैटेजी और डॉ. अशोक के. बेहुरिया, सीनियर फेलो, एमपी– आईडीएसए, चर्चाकर्ता थे। चर्चा में आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने स्वागत भाषण दिया था।

7वां आईसीडब्ल्यूए– एशिया न्यूज़ीलैंड फाउंडेशन (एएनज़ेडएफ) और न्यूज़ीलैंड एंड इंडिया रीसर्च इंस्टीट्यूट (एनज़ेडआईआरआई/NZIRI) ट्रैक 1.5 संवाद, क्राइस्टचर्च, न्यूज़ीलैंड, 30–31 जनवरी 2025

7वां भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए)– एशिया न्यूज़ीलैंड फाउंडेशन (एएनज़ेडएफ) और न्यूज़ीलैंड इंडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनज़ेडआईआरआई) वार्ता 30 जनवरी 2025 को क्राइस्टचर्च, न्यूज़ीलैंड में आयोजित की गई। वार्ता के दौरान तीन प्रमुख विषयों पर चर्चा हुईः बदलती वैश्विक भू– राजनीति, संबंधित क्षेत्रों में विकास पर परिप्रेक्ष्य और भारत– न्यूज़ीलैंड द्विपक्षीय संबंध।

उद्घाटन सत्र में न्यूज़ीलैंड में भारतीय उच्चायुक्त श्रीमती नीता भूषण और भारत में न्यूज़ीलैंड के उच्चायुक्त पैट्रिक राटा ने संवाद को संबोधित किया। यह उल्लेख किया गया कि भारत– न्यूज़ीलैंड संबंध लगातार बेहतर हो रहे हैं। दोनों देशों के बीच सात दशकों से भी अधिक समय से मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं; 2024 सबी क्षेत्रों में सहयोग वाला अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष रहा है, एक सकारात्मक प्रवृत्ति, जो 2025 तक जारी रहने की उम्मीद है। विश्व भू– राजनीति और विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का महत्व बढ़ रहा है। ट्रैक ।। वार्ता द्विपक्षीय संबंधों और लोगों के बीच संबंधों के लिए चुनौतियों और अवसरों दोनों पर स्वतंत्र और स्पष्ट चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती है। न्यूज़ीलैंड की ओर से एएनज़ेडएफ की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री सुज़ाना जेसप और भारत की तरफ से जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व प्रोफेसर चिंतामणि महापात्रा ने प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख के रूप में वार्ता को संबोधित किया। यह उल्लेख किया गया कि भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच हाल ही में उच्च स्तरीय संपर्कों का अभूतपूर्व आदान– प्रदान हुआ है। क्षेत्रीय और वैश्विक भू– राजनीति में चल रहे बदलावों पर चर्चा की गई और स्वतंत्र एवं खुले हिंद– प्रशांत क्षेत्र की जरूरत पर बल दिया गया।

पहला सत्र बदलती वैश्विक भू–राजनीतिः भारत और न्यूज़ीलैंड के नज़रिए विषय पर था। सत्र का संचालन एएनजेडएफ की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री सुज़ाना जेसप ने किया। सत्र के मुख्य चर्चाकर्ता न्यूज़ीलैंड इंडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो. डेविड कैपी और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर प्रो. चिंतामणि महापात्रा थे। सत्र के दौरान चर्चा में इस बात पर रौशनी डाली गई कि वर्तमान में दुनिया उथल– पुथल और अनिश्चितता से गुज़र रही है, जिसमें स्पष्ट विभक्ति बिंदु है जो नई विश्व व्यवस्था के उभरने के साथ महत्वपूर्ण साबित होंगे। न्यूज़ीलैंड पक्ष ने बताया कि विश्व स्तर पर उभरता राष्ट्रवाद, विशेष रूप से व्यापार और आर्थिक शुल्क, निर्यात नियंत्रण, प्रतिबंध और संरक्षणवाद में, दिखाई दे रहा है। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि बहुपक्षीय संस्थाएं और अंतरराष्ट्रीय सहयोग तनाव की स्थिति में हैं। समुद्री पूर्वी एशिया, दक्षिण चीन सागर और दक्षिण प्रशांत में चीन की आक्रामक मुद्रा पर चर्चा की गई। वैश्विक दक्षिण में भारत के नेतृत्व को स्वीकार किया गया। यह उल्लेख किया गया कि विश्व मामलों में भूमिका निभाना भारत के जीन में है।

दूसरे सत्र में हमारे क्षेत्रों के विकास के परिप्रेक्ष्य विषय पर ध्यान केंद्रित किया गया। सत्र का संचालन प्रो. चिंतामणि महापात्रा ने किया। सत्र के मुख्य चर्चाकर्ताओं में कैंटरबरी विश्वविद्यालय की प्रो. ऐनी– मैरी ब्रैडी और भारतीय नौसेना (सेवानिवृत्त) के कैप्टन (डॉ.) गुरप्रीत एस. खुराना शामिल थे। चर्चा के दौरान इस बात पर प्रकाश डाला गया कि वर्तमान में, हिंद– प्रशांत स्पष्ट रूप से सुर्खियों में है; यहाँ जो कुछ भी होगा, उसकी प्रतिध्वनि दुनिया भर में होगी। न्यूज़ीलैंड के लिए चुनौती पेश करने के नज़रिए से प्रशांत क्षेत्र के छोटे द्वीप देशों के साथ चीन के संबंधों पर चर्चा की गई। न्यूज़ीलैंड पक्ष ने अंटार्कटिका की सुरक्षा और रणनीतिक नज़रिए को देखने की जरूरत पर ज़ोर दिया। भारतीय पक्ष ने इस बात पर प्रकाश डाला कि हिंद महासागर क्षेत्र में, भारत सूक्ष्म पड़ोस नीति और सागर कथा पर ध्यान केंद्रित करता है, और भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल इस क्षेत्र में पहले प्रतिक्रियाकर्ता और पसंदीदा सुरक्षा भागीदार के रूप में देखा जाना चाहेंगे।

तीसरा सत्र भारत– न्यूज़ीलैंड द्विपक्षीय संबंध– भविष्य की राह, विषय पर था। इस सत्र का संचालन एएनज़ेडएफ की निदेशक (शोध और सहभागिता) डॉ. जूलिया मैकडोनाल्ड ने किया। सत्र के मुख्य चर्चाकारों में सैंडर्स अन्सवर्थ के पार्टनर श्री चार्ल्स फिन्नी और आईसीडब्ल्यूए की रिसर्च फेलो डॉ. प्रज्ञा पांडे थीं। सत्र के दौरान चर्चा में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि लोकतंत्र, स्वतंत्रता और कानून के शासन और नियम– आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति साझा प्रतिबद्धता के हमारे साझा मूल्यों को देखते हुए भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच अधिक सहयोग के लिए एक मजबूत तालमेल है। इस बात पर ज़ोर दिया गया कि हमें सभी स्तरों पर गहन सहभागिता के लिए और अधिक बातचीत करनी चाहिए। पर्यटन, शिक्षा, खेल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, स्वास्थ्य विज्ञान, कृषि प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष एवं फिनटेक ऐसे क्षेत्र हैं जो सहयोग को आगे बढ़ाने का अवसर देते हैं।

‘भविष्य की रूपरेखा: अंटार्कटिक शासन और अन्वेषण में भारत की उभरती भूमिका’ पर पैनल चर्चा, 4 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 04 फरवरी को सप्रूहाउस में 'भविष्य की रूपरेखाः अंटार्कटिक शासन और अन्वेषण में भारत की उभरी भूमिका' विषय पर पैनल चर्चा आयोजित की। इसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं महासागर अनुसंधान केंद्र (एनसीपीओआर) के पूर्व निदेशक डॉ. रसिक रविन्द्र ने की। भू– विज्ञान विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) प्रोफेसर नरेश चंद्र पंत, एनसीपीओआर के मानद अतिथि वैज्ञानिक; आर्कटिक और अंटार्कटिक– लाइट्स के विज्ञान और भू– राजनीति की शोध अध्येता डॉ. राजश्री घोष और आईसीडब्ल्यूए की वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. स्तुति बनर्जी पैनल में थीं। चर्चा में आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने स्वागत भाषण दिया।

आईसीडब्ल्यूए और प्रिंस सऊद अल फैसल इंस्टीट्यूट ऑफ डिप्लोमैटिक स्टडीज़ के बीच 9वां भारत– सऊदी अरब वार्ता, रियाद, सऊदी अरब, 5 फरवरी 2025

प्रिंस सऊद अल फैसल इंस्टीट्यूट फॉर डिप्लोमैटिक स्टडीज़ (पीएसएआईडीएस) के सहयोग से आईसीडब्ल्यूए ने 05 फरवरी 2025 को रियाद, सऊदी अरब में अपनी 9वीं वार्ता आयोजित की। संवाद में बदलती विश्व व्यवस्था, क्षेत्रीय मुद्दों और द्विपक्षीय संबंधों पर भारत– सऊदी के नज़रिए पर ध्यान केंद्रित किया गया। संवाद के लिए आईसीडब्ल्यूए के चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने पीएसएआईडीएस, रियाद का दौरा किया। आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आईसीडब्ल्यूए के उप महानिदेशक श्री एल. प्रशांत पिसे ने किया जबकि पीएसएआईडीएस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व पीएसएआईडीएस के महानिदेशक डॉ. मोशाबोब अल कहतानी ने किया। इस बात पर ज़ोर दिया गया कि ऐतिहासिक साझेदार होने के नाते भारत और सऊदी अरब को अपनी साझेदारी को और मजबूत करने की जरूरत है, विशेष रूप से तब जब क्षेत्र विभिन्न स्तरों पर संकटों का सामना कर रहा है। संवाद के पहले सत्र की अध्यक्षता नोजौद बिन श्राइम ने की और इसमें राजनीतिक एवं सांस्कृतिक द्विपक्षीय संबंधों पर ध्यान दिया गया। पीएसएआईडीएस के एशियाई अध्ययन केंद्र के प्रमुख डॉ. अली अल कर्नी और आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. लक्ष्मी प्रिया ने दोनों देशों के बीच मीडिया सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया क्योंकि यह धारणा निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। दोनों पक्षों ने रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत और सऊदी अरब के बीच सहयोग की संभावना पर प्रकाश डाला। सऊदी पक्ष ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि भारत एक महत्वपूर्ण देश है और उसे सुरक्षा प्रदाता के रूप में उभरने

के मामले में इस क्षेत्र में अधिक सक्रियता से शामिल होना चाहिए। सत्र के दौरान सांस्कृतिक संबंधों के महत्व और लोगों को दूसरे देश की संस्कृति और जीवनशैली से परिचित कराने के लिए कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। लोगों के बीच आपसी संबंध द्विपक्षीय साझेदारी का आधार बनते हैं और प्रतिभागियों ने इस बात पर सहमति जताई कि दोनों देशों को इन संबंधों को बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

डीडीजी आईसीडब्ल्यूए की अध्यक्षता में दूसरे सत्र में आर्थिक संबंधों, व्यापार और निवेश पर ध्यान दिया गया और आर्थिक एवं योजना मंत्रालय के मुख्य आर्थिक सलाहकार और पीएसएआईडीएस के आर्थिक प्रभाग के संकाय डॉ. रज्जा अल मरज़ौकी और आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. अरशद ने बढ़ते द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग पर ज़ोर दिया। सत्र में संयोजकता के महत्व और क्षेत्र एवं उससे परे भारत– मध्य पूर्व– यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) की प्रासंगिकता पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रतिभागियों ने निष्कर्ष निकाला कि आईएसईसी की सफलता लागत और समय के संदर्भ में इसकी दक्षता पर निर्भर करती है। यह भी उल्लेख किया गया कि आईमईसी अंतरराष्ट्रीय उत्तर– दक्षिण परिवहन गलियारे (आईएनएसटीसी) और चाबहार का पूरक है। वक्ताओं ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारतीय कंपनियों के लिए एनईओएम परियोजना, लाल सागर तटरेखा विकास और 2034 विश्व कप के मूलभूत सुविधाओं के विकास में निवेश करने का अवसर है।

तीसरे और चौथे सत्र में क्षेत्रीय मुद्दों और क्षेत्र में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ. अब्दुल्ला अल हमादी, डॉ. असद अल शामलान, निदेशक, सेंटर फॉर यूरोपियन स्टडीज़, पीएसएआईडीएस और डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, आईसीडब्ल्यूए ने चिंता के क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। वक्ताओं ने ब्रिक्स और हिंद– प्रशांत जैसे बहुपक्षीय संस्थानों के बढ़ते महत्व पर ज़ोर दिया। संवाद का समापन क्षेत्रीय संकट पर ज़ोर देने के साथ हुआ– सीरियाई संकट, गाज़ा युद्ध और यमन संकट क्षेत्र में मानव सुरक्षा के लिए चिंता का विषय हैं और वैश्विक समुदाय को इस पर सबसे अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

शंघाई सहयोग संगठन के महासचिव महामहिम श्री नूरलान येरमेकबायेव द्वारा 51वां सप्रू हाउस व्याख्यान, 6 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 6 फरवरी 2025 को शंघाई सहयोग संगठन के महासचिव महामहिम श्री नूरलान येरमेकबायेव की मेज़बानी में 'एससीओ और भारतः यूरेशिया में सहयोग के लिए क्षेत्रीय तालमेल को बेहतर बनाना' विषय पर 51वां सप्रू हाउस व्याख्यान का आयोजन किया। आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने स्वागत भाषण दिया।

संबोधन में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि एससीओ किस प्रकार क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा देकर तेज़ी से बदलते

परिदृश्य के अनुकूल ढल रहा है। यह खुलेपन और समावेशिता के सिद्धांतों को कायम रखता है, संयुक्त सैन्य अभ्यास और खुफिया जानकारी साझा करने के माध्यम से आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद का मुकाबला करने पर ध्यान देता है, साथ ही अलग– अलग देशों और संगठनों के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाता है।

भारत आपसी सम्मान और क्षेत्रीय सहयोग पर आधारित नई पहलों का प्रस्ताव देकर एससीओ में एक रणनीतिक भूमिका निभाता है। यह अंतरराष्ट्रीय उत्तर– दक्षिण परिवहन गलियारे जैसे परियोजनाओं के जरिए संयोजकता बढ़ाता है और फिल्म समारोहों एवं योग कार्यक्रमों जैसे सांस्कृतिक कूटनीति प्रयासों के साथ क्षेत्र के सॉफ्ट पावर में योगदान करता है। भारत की तकनीकी बढ़त और नीतिगत पहल उसे एससीओ की रूपरेखा में क्षेत्रीय व्यापार, मूलभूत सुविधाएं और सांस्कृतिक एकीकरण के प्रमुख चालक के रूप में स्थापित करती है।

एससीओ डिज़िटल परिवर्तन, हरित अर्थव्यवस्था, नवाचार और वित्तीय एककीरण जैसे उभरते क्षेत्रों में विस्तार कर रहा है, जिसमें पारस्परिक व्यापार में राष्ट्रीय मुद्राओं को धीरे– धीरे अपनाना शामिल है। साझा आर्थिक हितों, विशाल संसाधनों और जनसांख्यिकीय क्षमता के साथ, सदस्य देश वस्तुओं और सेवाओं की मुक्त आवाजाही की दिशा में काम कर रहे हैं। पर्यटन– विशेष रूप से चिकित्सा, पारिस्थितिकी और पाक– कला – को भी एक प्रमुख क्षेत्र माना गया है जिसमें क्षेत्र के लोगों के बीच संपर्क और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए वीज़ा व्यवस्था को सरल बनाने की बात की गई है।

सीएससीएपी बैठक, बैंकॉक, थाईलैंड, 6 फरवरी 2025

एशिया प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग परिषद (सीएससीएपी/CSCAP) ने 06 फरवरी 2025 को बैंकॉक में म्यांमार पर एक दिवसीय वार्ता का आयोजन किया, जिसका शीर्षक था 'शांति का मार्ग तलाशना: म्यांमार पर सीएससीएपी अनौपचारिक आरंभिक बैठक'। आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. श्रीपति नारायणन ने सीएससीएपी– इंडिया की ओर से बैठक में भाग लिया।

बैठक का उद्देश्य म्यांमार पर सीएससीएपी अध्ययन समूह की स्थापना की संभावना तलाशना था। अध्ययन समूह पर अंतिम निर्णय सीएससीएपी संचालन समिति की बैठक में लिया जाएगा जो जून 2025 में आयोजित की जाएगी।

जनकपुर साहित्य महोत्सव, जनकपुर, नेपाल, 6-8 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुबोध चंद्र भारती ने नेपाल के जनकपुर में आयोजित जनकपुर साहित्य महोत्सव 2025 के छठे (6) संस्करण में परिषद का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने मैथिली में 'सीता: बियाहक संस्कार आ परंपरा के समृद्ध साझा धरोहर क प्रतिरूप' शीर्षक पर व्याख्यान दिया जिसमें सीमा पार वैवाहिक अनुष्ठानों और परंपराओं के माध्यम से भारत और नेपाल के बीच रोटी– बेटी संबंधों की समृद्ध साझा विरासत की तलाश की गई। इस कार्यक्रम का आयोजन नेपाल के नव मिथिला फाउंडेशन ने किया था और काठमांडू में स्थित भारतीय दूतावास ने इसमें सहयोग किया था। इस कार्यक्रम में घरेलू राजनीति, विदेश नीति, संवैधानिक मुद्दे, संघवाद और कानून के शासन जैसे विषयों पर विविध प्रकार की पैनल चर्चाएं हुईं। इसके अलावा साहित्य, कला, खेल, संगीत और संस्कृति के विषयों पर केंद्रित कई साहित्यिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

'नेपाल की विदेश नीति और सीमांचल क्षेत्र' शीर्षक से एक महत्वपूर्ण सत्र का संचालन काठमांडू पोस्ट के मुख्य उपसंपादक अनिल गिरि ने किया। इस सत्र में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. इंद्र अधिकारी और प्रसिद्ध राजनीतिक विश्लेषक तुला नारायण शाहा जैसे प्रतिष्ठित सदस्य पैनल में शामिल थे। सांसद संतोष परियार ने 'केंद्र की नज़र में मधेश' शीर्षक से उल्लेखनीय प्रस्तुति दी जिसमें क्षेत्र की उभरती गतिशीलता के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी गई। इसके अलावा, नेपाल विद्युत प्राधिकरण के पूर्व प्रबंध निदेशक श्री कुलमन घिशिंग ने जलविद्युत विकास और क्षेत्रीय विद्युत व्यापार पर एक आकर्षक सत्र आयोजित किया। उन्होंने नेपाल की जलविद्युत क्षमता और पड़ोसी देशों– भारत और बांग्लादेश के साथ उसके विद्युत व्यापार पर चर्चा की।

'मधेश की राय' शीर्षक से एक अन्य पैनल चर्चा का संचालन पत्रकार टीकाराम यात्री ने किया और इसमें मनीष सुमन (मधेश प्रांतीय विधानसभा के सदस्य), योगेश भट्टाराई (प्रतिनिधि सभा के सदस्य) और डॉ. अमरेश कुमार सिंह (स्वतंत्र राजनीतिज्ञ और प्रतिनिधि सभा के सदस्य) शामिल थे। इसके अलावा, पत्रकार हरि बहादुर थापा द्वारा 'संविधान, संघवाद और कानून' पर चर्चा की गई। इस चर्चा में नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति कल्याण श्रेष्ठ की अंतर्दृष्टि को भी शामिल किया गया। इन आयोजनों ने अलग– अलग दृष्टिकोणों के लिए जगह बनाई और नेपाल के सामाजिक– राजनीतिक परिदृश्य पर सार्थक चर्चाओं को सुगम बनाया।

यूरोपीय संघ द्वारा सह– वित्तपोषित जीन मोनेट मॉड्यूल के तहत जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के यूरोपीय अध्ययन केंद्र में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, 7–9 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के प्रवास, गतिशीलता और प्रवासी अध्ययन केंद्र(सीएमएमडीएस) में सलाहकार और शोध प्रमुख सुश्री अंबी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ के यूरोपीय अध्ययन केंद्र में 'प्रवास– शासनः प्रवास और गतिशीलता पर भारतीय– यूरोपीय संघ की भागीदारी' विषय पर एक विशेषज्ञ व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान 'भारतीयों का यूरोपीय संघ में प्रवासः चुनौतियां और संभावनाएं' विषय पर दो दिवसीय अकादमिक कार्यशाला का हिस्सा था, जिसे जीन मोनेट मॉड्यूल के तहत आयोजित किया गया था और यूरोपीय संघ द्वारा सह– वित्तपोषित किया गया था।

अपने संबोधन में सुश्री अंबी ने भारत– यूरोपीय संघ साझेदारी के तहत की गई प्रमुख सहयोगी पहलों पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से सुरक्षित, व्यवस्थित और नियमित प्रवास की रूपरेखा में। उन्होंने प्रवासन और गतिशीलता पर भारत– यूरोपीय संघ साझा एजेंडा (सीएएमएम) चरण ।। परियोजना के माध्यम से आईसीडब्ल्यूए में सीएमएमडीएस के चल रहे काम की ओर ध्यान दिलाया और बदलते वैश्विक कार्यस्थल के संदर्भ में परिपत्र गतिशीलता को बढ़ावा देने, वैचारिक स्पष्टता के माध्यम से प्रवासन शासन की पुनर्कल्पना करने और प्रवासी कल्याण को सुदृढ़ करने के महत्व पर विचार किया।

कार्यशाला में कई प्रतिष्ठित वक्ताओं ने भाग लिया, जिसमें विदेश मंत्रालय के सुषमा स्वराज इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन सर्विस (एसएसआईएफएस/SSIFS), के डीन राजदूत राज कुमार श्रीवास्तव; जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के डीन प्रोफेसर अमिताभ मट्टू; प्रो. उम्मू सलमा बावा, अध्यक्ष, यूरोपीय अध्ययन केंद्र; और प्रो. बिनोद खदरिया, जिन्होंने उद्घाटन सत्र के दौरान विशेष टिप्पणियां दीं। अन्य विशेषज्ञ व्याख्यान प्रो. भास्वती सरकार (जेएनयू), डॉ. शीतल शर्मा (जेएनयू), प्रो. बसंत पोटनुरु (फोर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट) और प्रो. देबोलीना कुंडू (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स), द्वारा दिए गए।

मंगोलिया के असाधारण एवं पूर्णाधिकारी राजदूत महामहिम श्री गनबोल्ड डंबजाव का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 11 फरवरी 2025

मंगोलिया के असाधारण एवं पूर्णाधिकारी राजदूत महामहिम श्री गनबोल्ड डंबजाव ने अकादमिक सहयोग पर चर्चा करने के लिए आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की।

सुश्री मारिजा रौस, सिल्क रूट्स (दक्षिण और पश्चिम एशिया) की प्रमुख, इंटरनेशनल सेंटर फॉर माइग्रेशन पॉलिसी डेवलपमेंट (आईसीएमपीडी) (आईसीडब्ल्यूए का एमओयू पार्टनर) का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 12 फरवरी 2025

अंतरराष्ट्रीय प्रवास नीति विकास केंद्र (आईसीएमपीडी) (आईसीडब्ल्यू के एमओयू साझेदार) की सिल्क रूट्स (दक्षिण और पश्चिम एशिया) की प्रमुख सुश्री मारिजा रौस ने अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता और प्रवास पर सहयोग की चर्चा करने के लिए आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की। अपर सचिव नूतन महावर ने आईसीडब्ल्यूए के प्रवासन वर्टिकल, सेंटर फॉर माइग्रेशन, मोबिलिटी एंड डायस्पोरा स्टडीज़ (सीएमएमडीएस) द्वारा किए गए कार्यों का अवलोकन साझा किया। उन्होंने भारत– यूरोपीय संघ सीएएमएम चरण ।. परियोजना के तहत जारी साझेदारी और भारत– यूरोपीय संघ गलियारे में सर्कुलर मोबिलिटी और नियमित मार्गों को सुविधाजनक बनाने के लिए कार्य के संभावित क्षेत्रों पर चर्चा की।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्याय के राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन के विशेष केंद्र (एससीएनएसएस/ SCNSS) में विशेष व्याख्यान, 12 फरवरी 2025

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन केंद्र (एससीएनएसएस) ने 12 फरवरी 2025 को आईसीडब्ल्यूए के शोधकर्ता डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य द्वारा 'पाकिस्तान में बढ़ती अस्थिरताः भारत के लिए निहितार्थ' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया।

डॉ. भट्टाचार्य ने पाकिस्तान की संघीय सरकार को नुकसान पहुंचाने वाली राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता एवं संघीय सरकार के कुशासन और उनकी औपनिवेशिक मानसिकता के बारे में बात की, जिसने पंजाब प्रांत को छोड़कर पाकिस्तान के सभी प्रांतों को अलग– थलग कर दिया है। उन्होंने बताया कि कैसे लोगों ने सात दशक से चले आ रहे उत्पीड़न के खिलाफ विरोध करने के लिए संवैधानिक साधनों का सहारा लिया है। उन्होंने उन विभिन्न संगठनों के बारे में भी बताया जिन्होंने दमनकारी पाकिस्तानी सेना से लड़ने के लिए हथियार उठाए हैं, जिसने हमेशा से ही न्यायेतर हत्याओं, सालों तक गैरकानूनी हिरासत या निर्दोष नागरिकों के खिलाफ सशस्त्र दमन के कदम उठाए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे इस प्रकार की अस्थिरता देश को विस्फोट की ओर धकेल रही है जिसका क्षेत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

इस व्याख्यान में एससीएनएसएस और विश्वविद्यालय के अन्य केंद्रों के संकाय और छात्र भी शामिल हुए। व्याख्यान के बाद एक घंटे का परस्पर संवादमूलक प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, 13 फरवरी 2025

डॉ. पुनीत गौर, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए ने 13 फरवरी 2025 को दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 'भारत की विदेश नीति में नई दिशा' विषय पर पैनल चर्चा में वक्ता के रूप में भाग लिया। अपने संबोधन में, डॉ. गौर ने बताया कि बीते दशक में भारत की विदेश नीति में महतव्पूर्ण बदलाव आया है, जो इसकी बढ़ती ताकत और वैश्विक जिम्मेदारी लेने की इसकी क्षमता को दर्शाता है। पैनल चर्चा में पैनल सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित प्रोफेसर संजय भारद्वाज, दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र, एसआईएस, जेएनयू के प्रोफेसर और चर्चाकर्ता के रूप में रामजस कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर श्री विकास कपूर शामिल थे।

‘बांग्लादेश में वर्तमान अस्थिरताः इसका इतिहास फिर से लिखना या अप्रत्याशित भविष्य की रूपरेखा तैयार करना?’ पर पैनल चर्चा, 14 फरवरी 2025

14 फरवरी 2025 को, आईसीडब्ल्यूए ने सप्रू हाउस में ‘बांग्लादेश में वर्तमान अस्थिरता: इसका इतिहास फिर से लिखना या अप्रत्याशित भविष्य की रूपरेखा तैयार करना?’ शीर्षक से एक पैनल चर्चा आयोजित की। इस चर्चा की अध्यक्षता बांग्लादेश में भारत की पूर्व उच्चायुक्त राजदूत वीना सीकरी ने की। इस कार्यक्रम के पैनल में रहे– प्रोफेसर संजय भारद्वाज, दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र, एसआईएस, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; और सुश्री सोहिनी बोस, एसोसिएट फेलो, ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओआरएफ), कोलकाता, जो चर्चा में ऑनलाइन शामिल हुईं। अपर सचिव, नूतन कपूर महावर (आईसीडब्ल्यूए) ने स्वागत भाषण दिया।

चर्चा का मार्ग प्रशस्त करते हुए अपर सचिव महावर ने कहा कि बांग्लादेश की राजनीतिक संस्कृति में अत्यधिक दमन और अपर्याप्त शासन की विशेषता है। बीते कुछ महीनों में हिंसक विरोध प्रदर्शन, हड़ताल, सड़क पर प्रदर्शन, लूटपाट और आगज़नी, निजी एवं सार्वजनिक संपत्ति का विनाश, राजनीतिक कारावास और हत्याएं आम बात रही हैं। बांग्लादेश में अब शासन परिवर्तन के बाद इतिहास को फिर से लिखने की कोशिशें हो रही हैं। बांग्लादेश की राजनीतिक संस्कृति पाकिस्तान जैसी ही है क्योंकि वे एक चौथाई सदी से जुड़वां हैं। अवामी लीग सरकार की बर्खास्तगी के बाद छात्र समुदाय, राजनीतिक गुटों और कट्टरपंथी तत्वों को शांत करने की बजाय, सेना समर्थित अंतरिम सरकार लोकतंत्र की आड़ में ध्रुवीकरण के एजेंडे को आगे बढ़ा रही हैं।

द्विपक्षीय संबंधों को स्थिर करने की कोशिश करते हुए, भारत साझा अंतरराष्ट्रीय सीमा पर नज़र रखना जारी रखता है क्योंकि राजनीतिक एवं आर्थिक अस्थिरता अवैध गतिविधियों – जैसे मानव तस्करी, नशीले पदार्थों की तस्करी और मवेशियों की तस्करी, को प्रेरित कर सकती हैं। तस्करी और घुसपैठ को रोकने के लिए सीमा के दोनों ओर के लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। राजदूत सीकरी ने अंतरिम सरकार और उसके कार्यों की वैधता पर सवाल उठाते हुए कई चिंताएं उठाईं, जैसे भीड़ द्वारा न्याय कर देना, जब उम्रदराज न्यायाधीशों को बिना किसी उचित प्रक्रिया के सेवानिवृत्त होने के लिए विवश किया जाता है और अंतरिम सरकार, जिसमें इस्लामवादी संगठनों के सलाहकार हैं।

बताया जा रहा है कि ज़मात– ए– इस्लामी का स्थिति पर पूरा नियंत्रण है। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था बीते साल की तुलना में आधी या आधी से भी कम दर से विकसित होने का अनुमान है, जिससे रोज़गार के अवसर प्रभावित होंगे। मुद्रास्फीति की अधिकता के कारण निवेश में कमी आ रही है, जिसके कारण अधिक वेतन को लेकर श्रमिकों में असंतोष के कारण कारखाने बंद हो रहे हैं। प्रो. भारद्वाज ने बांग्लादेश में सक्रिय दो अलग– अलग ताकतों के बारे में बतायाः– जातीय– सांस्कृतिक और राजनीतिक। ये जातीय– सांस्कृतिक ताकतें, जिन्हें मुक्ति संग्राम समर्थक ताकतों के रूप में जाना जाता है, बंगाली राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और समाजवाद पर आधारित 1971 की समावेशी भावना में विश्वास करती हैं। वे बंगाली संस्कृति में सांस्कृतिक गतिशीलता और समावेशिता लाने के अपने प्रयासों में प्रगतिशील रहे हैं।

इसे कुछ लोगों ने चुनौती दी है जो जातीय– धार्मिक ढांचे में विश्वास करते हैं। वे उन्हीं इस्लामी राष्ट्रवादियों, विशेष रूप से पूर्वी पाकिस्तान में मौजूद ज़मात–ए–इस्लाम में विश्वास करते हैं जिन्होंने बंगाली और अरबी लीपियों की जगह उर्दू को राष्ट्रीय भाषा बनाने का प्रयास किया था। वे समाज में ध्रुवीकरण जारी रखते हैं और सामाजिक ताने– बाने में कट्टरवाद, हिंसा और अराजकता फैलाते हैं। बताया गया है कि जमात और कट्टरपंथी ताकतें, जिनमें पाकिस्तान में सैन्य प्रतिष्ठान भी शामिल हैं, बांग्लादेश के भविष्य के मार्ग को निर्धारित करने के लिए मिलकर काम कर रही हैं। डॉ. पटनायक ने अंतरिम सरकार के अव्यवस्थित कामकाज का जिक्र किया जो वर्तमान संविधान को बदलने का प्रयास कर रही हैं। आगामी चुनाव के लिए रोडमैप को लेकर राजनीतिक दल बंटे हुए हैं। बीएनपी का मानना है कि चुनाव से पहले छोटे– मोटे सुधार लागू किए जा सकते हैं जबकि बड़े सुधारों को निर्वाचित सरकार पर छोड़ा जा सकता है। हालांकि, ज़मात इससे सहमत नहीं है और तत्काल चुनाव नहीं चाहती है। उन्होंने बताया कि बांग्लादेश में कितने लोग 'दूसरी आज़ादी' या 'दूसरी मुक्ति' शब्द का इस्तेमाल करते हैं जो 1971 के मुक्ति संग्राम के महत्व को कम करता है और साथ ही देश के राजनीतिक इतिहास को फिर से लिखने का काम करता है।

सुश्री बोस ने कहा कि भारत– बांग्लादेश संबंधों में कुछ उतार– चढ़ाव आ सकते हैं, लेकिन दोनों देश इतिहास, संस्कृति, भाषा, खान–पान की आदतें और भौगोलिक तत्व साझा करते हैं, जैसे कि बंगाल की खाड़ी में सीमा पार की नदियाँ और समुद्री क्षेत्र, जो एक– दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और शासन परिवर्तन या सरकार के बदलाव से इनमें कोई बदलाव नहीं हो सकता। बांग्लादेश में मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली मौजूदा अंतरिम सरकार ने इन दोनों देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही साझेदारी को बाधित कर दिया है जो आर्थिक और राजनीतिक उथल– पुथल से जूझ रही है। वर्तमान में भारत और बांग्लादेश अज्ञात क्षेत्र में हैं और उन्हें अपने कूटनीतिक रुख पर विचार– विमर्श करने के लिए समय की जरूरत होगी। अंतरिम सरकार की विदेश नीति के विकल्प घरेलू उथल– पुथल और वैधता की तलाश दर्शाते हैं।

8वीं हिंद महासागर सम्मेलन– 'समुद्री साझेदारी के नए क्षितिज का सफ़र' विषय पर आईओसी 2025, मस्कट, ओमान, 16–17 फरवरी 2025

8वां हिंद महासागर सम्मेलन– आईओसी 2025 "समुद्री साझेदारी के नए क्षितिज का सफ़र" विषय पर ओमान के विदेश मंत्रालय के साथ साझेदारी में इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 16 - 17, फरवरी 2025 को आयोजित किया गया था। आईसीडब्ल्यूए की शोध निदेशक डॉ. निवेदिता रे ने 16-17 फरवरी 2025 को ओमान के विदेश मंत्रालय के साथ साझेदारी में इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली और राजरत्नम स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ (आरएसआईएस) द्वारा आयोजित 8वें हिंद महासागर सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन का विषय था– "समुद्री साझेदारी के नए क्षितिज़ का सफ़र।" इसमें 47 देशों के 27 विदेश मंत्रियों और प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया।

ओमान के विदेश मंत्री श्री सैय्यद बदर बिन हमद अलबुसैदी ने स्वागत भाषण दिया और श्री विवियन बालाकृष्णन ने विशेष भाषण दिया। मुख्य भाषण भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने दिया। समुद्री साझेदारी के नए क्षितिज़ के सफ़र पर पहले पूर्ण सत्र में ईरान के विदेश मंत्री श्री अब्बास अराघची, मॉरीशस के विदेश मंत्री धनंजय रामफुल, श्रीलंका के विदेश मंत्री विजिता हेराथ, केन्या के खनन, नीली अर्थव्यवस्था और समुद्री मामलों के कैबिनेट सचिव हसन अली जोहो, ईजीएच, इरीशिया के विदेश मंत्री उस्मान सालेह, भूटान के विदेश मंत्री डी. एन. धुंग्येल, ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री पेनी वोंग ने अपने– अपने विचार रखे।

दूसरे पूर्ण सत्र में वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को आगे बढ़ाने पर चर्चा की गई, जिसमें संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मामलों के राज्य मंत्री अहमद अली अल सईघ, नेपाल के विदेश मामलों के मंत्री अरज़ू राणा देउबा, कतर के विदेश मामलों के राज्य मंत्री सुल्तान बिन साद बिन सुल्तान अल मुरैखी, मालदीव के विदेश मामलों के मंत्री अब्दुल्ला खलील, सेशेल्स के आंतरिक मामलों के मंत्री एरोल फोन्सेका, सेशेल्स के आंतरिक मामलों के मंत्री एरीवान यूसुफ, ब्रुनेई के विदेश मामलों के सेकेंड मिनिस्टर एरीवान यूसुफ ने टिप्पणी साझा की।

चर्चा में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने, समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने, ग्लोबल साउथ की आवाज़ को बुलंद करने और समुद्री क्षेत्र में प्रमुख चुनौतियों से निपटने पर ध्यान दिया गया। सम्मेलन में व्यापार गलियारों को बेहतर बनाने, नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने और बंदरगाह सुरक्षा एवं शासन हेतु तकनीकी प्रगति का लाभ उठाने की रणनीतियों पर चर्चा की गई।

‘उप– क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ानाः भारत की पड़ोस प्रथम नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम’ विषय पर पैनल चर्चा, 18 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 18 फरवरी 2025 को सप्रू हाउस में ‘उप–क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ानाः भारत की पड़ोस प्रथम नीति का महत्वपूर्ण आयाम’ विषय पर एक ज्ञानवर्धक पैनल चर्चा का आयोजन किया। आयोजित की। इस सत्र की अध्यक्षता भारत के पूर्व विदेश सचिव, राजदूत हर्षवर्धन श्रृंगला ने की। सत्र में प्रोफेसर एस.डी मुनि, प्रोफेसर इमेरिटस, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली; डॉ. प्रबिर डे, प्रोफेसर, रीसर्च एंड इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग कंट्रीज़ (आरआईएस), नई दिल्ली; और कैप्टन सरबजीत एस परमार, प्रतिष्ठित फेलो, काउंसिल फॉर स्ट्रैटेजिक एंड डिफेंस रीसर्च, नई दिल्ली। अपने स्वागत भाषण में आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव सुश्री नूतन कपूर महावर ने बीते एक दशक में पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने में भारत की 'पड़ोस पहले नीति' के महत्वपूर्ण रहने पर ज़ोर दिया। यह नीति सम्मान, संवाद, शांति और सांस्कृतिक आदान–प्रदान पर आधारित है जो भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के आधार पर गहरे संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भारत के कूटनीतिक प्रयासों का मार्गदर्शन करती है। उन्होंने संक्षेप में यह भी बताया कि भारत आधिपत्यवादी दृष्टिकोण नहीं अपनाता है और उसका मानना है कि उसके पड़ोसियों की स्थिरता और समृद्धि उसकी अपनी प्रगति से जुड़ी हुई है।

राजदूत श्रृंगला ने प्रभावी उप– क्षेत्रीय सहयोग हेतु छह स्तंभों को रेखांकित कियाः भारत की नेतृत्वकारी भूमिका, कनेक्टिविटी (मूलभूत सुविधाएं और डिजिटल), ऊर्जा भागीदारी, क्षेत्रीय सुरक्षा और संस्थागत मजबूती। प्रो. मुनि ने पड़ोसी देशों में आंतरिक राजनीतिक अशांति, भारत की संसाधन संबंधी बाधाओं और चीन से प्रतिस्पर्धी कूटनीति जैसी चुनौतियों का हवाला देते हुए सार्क से बिम्सटेक और बीबीआईएन की ओर रुख करने पर ज़ोर दिया। डॉ. डे ने व्यापार को बढ़ाने में बीबीआईएन की भूमिका पर प्रकाश डाला और विशेष रूप से भारत के उत्तर– पूर्व, बांग्लादेश, भूटान और नेपाल में महत्वपूर्ण सीमा पार आर्थिक एकीकरण का उल्लेख किया।

कैप्टन परमार ने समुद्री सुरक्षा और संपर्क पर क्षेत्रीय अस्थिरता के प्रभाव पर चर्चा की, विश्वास, आर्थिक संबंधों एवं मजबूत समुद्री सहयोग की व्यवस्था की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। चर्चा में पड़ोसी प्रथम नीति के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक विकास और प्रगाढ़ संबंधों को बढ़ावा देने, उप– क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए बिम्सटेक, बीबीआईएन और कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन जैसी पहलों का लाभ उठाने के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई।

श्री उपेन्द्र एस. बघेल, पूर्व आईपीएस अधिकारी द्वारा संवाद, 21 फरवरी 2025

21 फरवरी 2025 को, आईसीडब्ल्यूए ने उपेन्द्र एस. बघेल (पूर्व आईपीएस अधिकारी) द्वारा 'संघर्ष प्रकार की स्थितियों और अंतर्निहित राजनीति में अंतरराष्ट्रीय आपराधिक कानूनों का अनुप्रयोगः सीरियाई स्थिति पर विचार' विषय पर वार्ता आयोजित की। इस कार्यक्रम का संचालन आईसीडब्ल्यूए के उप महानिदेशक श्री एल. प्रशांत पिसे ने किया और कार्यक्रम में आईसीडब्ल्यूए के इन– हाउस फैकल्टी ने भाग लिया। श्री बघेल ने संघर्षों की प्रकृति और उनके समाधान के बारे में बात की और इस संबंध में सशस्त्र संघर्षों, युद्धों और स्वतंत्रता संग्राम/ आत्मनिर्णय, सीमा विवाद, आंतरिक (घरेलू) मुद्दों और सामाजिक– राजनीतिक– सांस्कृतिक कारकों से संबंधित संघर्षों के बीच अंतर पर चर्चा की। बातचीत के बाद संक्षिप्त प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया था।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ संवाद, 25 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के यूथ आउटरीच के हिस्से के रूप में, 25 फरवरी 2025 को सप्रू हाउस में जेएनयू के छात्रों का दौरा आयोजित किया गया ताकि विचार मंच की भूमिका और #InternationalRelations #ForeignPolicy पर अध्ययन को बढ़ावा देने में आईसीडब्ल्यूए के योगदान को समझा जा सके। छात्रों को सप्रू हाउस की लाइब्रेरी जाने का भी मौका मिला।

भारतीय दूतावास, अंकारा (तुर्किए), राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अनुसंधान फाउंडेशन (एसईटीए) और भारत– पश्चिम एशिया वार्ता केंद्र (सीआईडब्ल्यूएडी), अंकारा, तुर्किए द्वारा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 26–27 फरवरी 2025

26–27 फरवरी 2025 को अंकारा (तुर्किए) स्थित भारतीय दूतावास ने अंकारा स्थित विचारमंच फाउंडेशन फॉर पॉलिटिकल, इकोनॉमिक एंड सोशल रिसर्च (एसईटीए/SETA) और नई दिल्ली स्थित विचारमंच इंटरनेशनल डायलॉग एंड डिप्लोमेसी फाउंडेशन (आईडीडीएफ / IDDF) और सेंटर फॉर इंडिया– वेस्ट एशिया डायलॉग (सीआईडब्ल्यूएडी/ CIWAD) के साथ मिलकर 'भारत– तुर्किए संबंधः ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य– अवसर और चुनौतियां' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में प्रतिष्ठित विद्वानों और राजनयिकों ने भाग लिया।

उद्घाटन और समापन सत्रों के अलावा, क्षेत्रीय और वैश्विक व्यवस्था, वैश्विक दक्षिण पर दृष्टिकोण और भारत एवं तुर्किए के बीच द्विपक्षीय संबंधों समेत प्रमुख मुद्दों पर केंद्रित चार विषयगत सत्र थे। आईसीडब्ल्यूए के वरिष्ठ अनुसंधान फेलो डॉ. फज्जुर रहमान ने आईसीडब्ल्यूए के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। बंद कमरे में विचारमंच फोरम चर्चा के दौरान, उन्होंने ऐतिहासिक आधार पर विशेष ज़ोर दिया, जिस पर भारत और तुर्किए दोनों अपने द्विपक्षीय संबंधों में विविधता लाने और आपसी विश्वास बनाने के लिए निर्माण कर सकते हैं। संबंधों को बेहतर बनाने और परंपरागत बाधाओं को दूर करने की जरूरत पर रोशनी डालते हुए उन्होंने एक क्रमिक दृष्टिकोण का सुझाव दिया– जिसकी शुरुआत आर्थिक संबंधों के निर्माण से की जा सकती है।

आईसीडब्ल्यूए– जीआईएसआर, कतर (ग्लोबल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक रीसर्च) सेमिनार, 27 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने ग्लोबल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक रिसर्च (जीआईएसआर/ GISR), दोहा के सहयोग से 27 फरवरी 2025 को सप्रू हाउस में भारत– क़तर संबंधों पर एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में बदलती विश्व व्यवस्था, क्षेत्रीय मुद्दों और द्विपक्षीय संबंधों पर भारत– क़तर नज़रिए पर ध्यान दिया गया। सेमिनार के लिए जीआईएसआर से चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल आईसीडब्ल्यूए आया। आईसीडब्ल्यूए

प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व डीडीज आईसीडब्ल्यूए श्री एल. प्रशांत पिसे ने किया, जबकि जीआईएसआर प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कार्यकारी निदेशक, जीआईएसआर राजदूत मोहम्मद अली चिही ने किया। उद्घाटन भाषण में कहा गया कि भारत और क़तर ऐतिहासिक साझेदार हैं और इस साझेदारी को और आगे ले जाने की जरूरत है।

सेमिनार का पहला सत्र भारत– क़तर द्विपक्षीय संबंधों पर केंद्रित था, जिसमें ऊर्जा, व्यापार और निवेश, भारत– क़तर सॉफ्ट डिप्लोमेसी, संस्कृति, प्रवासी और लोगों के बीच संबंदों पर ज़ोर दिया गया। सत्र की अध्यक्षता हमद बिन खलीफा विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ पब्लिक पॉलिसी के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. लोगन कोचरन ने की और जीआईएसआर के वक्ताओं में क़तर पर्यटन के अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रमुख श्री मुहम्मद अल महमीद और जीआईएसआर के शोध अध्येता श्री मुदस्सर अली बेग शामिल थे। आईसीडब्ल्यूए की ओर से वक्ताओं में इंडिया नैरेटिव के पूर्व संपादक श्री अतुल अनेजा और आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. लक्ष्मी प्रिया रहीं। दोनों पक्षों ने दोनों देशों के बीच मौजूदा संबंधों पर ज़ोर दिया और संस्कृति तथा लोगों के बीच आपसी संपर्क पर ध्यान केंद्रित करके संबंधों को गति प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रतिभागियों ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि पर्यटन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमें सहयोग की संभावना है। इससे अलग, दोनों पक्षों ने दोनों देशों के बीच बढ़ते आर्थिक संबंधों पर संतोष व्यक्त किया और हाइड्रोकार्बन के अतिरिक्त क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की।

सेमिनार का दूसरा सत्र बदती वैश्विक और क्षेत्रीय गतिशीलता पर भारत और क़तरके नज़रिए पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता भारतीय विदेश मंत्रालय सके पूर्व सचिव, राजदूत संज सिंह ने की और आईसीडब्ल्यूए के वक्ताओं में कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडो– पेसेफिक स्टडीज़ के संस्थापक प्रोफेसर चिंतामणि महापात्रा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मोहम्मद मुदस्सिर क़मर और आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. अन्वेषा घोष शामिल थे। जीआईएसआर के वक्ताओं में डॉ. लोगान कोक्रेन और डॉ. क्रिस डोएल, निदेशक, काउंसिल फॉर अरब– ब्रिटश अंडरस्टैंडिंग (वर्चुअल मोड में) शामिल थे। सत्र में बदलती वैश्विक व्यवस्था और बहुध्रुवीय विश्व के उदय, क्षेत्रीय गतिशीलता में बदलाव, अब्राहम समझौते के महत्व, गाज़ा युद्ध और सीरिया की धारणाओं, यमन संकट के प्रभाव, सीरिया के पुनर्निर्माण की जरूरत और अफ़गानिस्तान में उभरती स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया गया। दोनों पक्षों ने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की महत्ता और भारत के एक शीर्ष आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने पर चर्चा की। सत्र में क़तर के आईएमईईसी का हिस्सा बनने की संभावना पर भी चर्चा की गई। इसके अलावा, सत्र में अलग– अलग क्षेत्रों में कोडिंग, चैटबॉट, ह्यूमनॉइड और रोबोटिक्स के बढ़ते प्रयोग पर भी प्रकाश डाला गया।

सेजोंग इंस्टीट्यूट और भारतीय दूतावास, सियोल, दक्षिण कोरिया द्वारा 'भविष्य को जोड़नाः कोरिया– भारत संबंधों में नए क्षितिज तलाशना' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 27 फरवरी 2025

डॉ. तुनचिनमंग लैंगेल, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, 'भविष्य को जोड़नाः कोरिया– भारत संबंधों में नए क्षितिज तलाशना' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के पहले संस्करण में पैनल के सदस्य के रूप में शामिल हुए। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन सेजोंग इंस्टीट्यूट और कोरिया गणराज्य के सियोल में भारतीय दूतावास द्वारा 27 फरवरी 2025 को आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम को एशिया फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सेजोंग इंस्टीट्यूट के चेयरमैन योंग– जून ली, कोरिया गणराज्य में भारत के राजदूत अमित कुमार, विदेश मंत्रालय में आर्थिक मामलों के उप मंत्री ही– सांग किम और आसन इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिसी स्टडीज के चेयरमैन यंग– क्वान यून (विदेश मामलों और व्यापार मंत्रालय के पूर्व मंत्री) ने भाग लिया। डॉ. लैंगेल ने 'भारत और आरओकेः बदलती वैश्विक व्यवस्था में नई दिशा तय करना' विषय पर चर्चा की।

'हिंद– प्रशांत में गैर– परंपरागत चुनौतियां: क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा स्थिति को पुनर्परिभाषित करना और सहयोग को बढ़ावा देना' विषय पर पैनल चर्चा, 28 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 28 फरवरी को सप्रू हाउस में 'हिंद– प्रशांत में गैर– परंपरागत चुनौतियां: क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा स्थिति को पुनर्परिभाषित करना और सहयोग को बढ़ावा देना' विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की। इसकी अध्यक्षता वाइस एडमिरल शेखर सिन्हा, ट्रस्टी बोर्ड के अध्य, इंडिया फाउंडेशन, पश्चिमी नौसेना कमान के पूर्व फ्लैग ऑफिसर कमांडर– इन– चीफ और एकीकृत रक्षा स्टाफ के प्रमुख ने की। कमोडोर अभय कुमार सिंह, शोध अध्येता, मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, नई दिल्ली; प्रो. जगन्नाथ पांडा, प्रमुख स्टॉकहोम सेंटर फॉर साउथ एशियन एंड इंडो– पेसेफिक अफेयर्स (एससीएसए– आईपीए/ SCSA-IPA), स्टॉकहोम; मैरिएन पेरोन– डोइस, शोध निदेशक, द फ्रेंच इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल एंड स्ट्रैटेजिक अफेयर्स (आईआरआईएस/IRIS), पेरिस; और सुश्री स्वाति गणेशन, सलाहकार, ऊर्जा संक्रमण, जलवायु नीति, अंतरराष्ट्रीय मामले, पैनल में थे। चर्चा में नूतन कपूर महावर, अपर सचिव, आईसीडब्ल्यूए द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।

वियतनाम विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के साथ वार्तालाप, 3 मार्च 2025

वियतनाम के विदेश मंत्रालय के नीति नियोजन विभाग के महानिदेशक श्री ली दीन्ह तिन्ह ने 3 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने बढ़ती भू– राजनीतिक अनिश्चितता और तीव्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर चर्चा की। एएस नूतन कपूर महावर ने 2014 में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा व्यक्त की गई भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी की उपलब्धियों के बारे में बताया और यह भी बताया कि कैसे आसियान और वियतनाम के साथ भारत का जुड़ाव व्यापक और विविधतापूर्ण हो गया है। उन्होंने भारत के हिंद– प्रशांत नज़रिए और आसियन के नज़रिए के बीच संमिलन पर जोर दिया, जिससे क्षेत्रीय सहयोग मजबूत हुआ।

द्विपक्षीय मोर्चे पर, श्री ली दिन्त तिन्ह ने भारत को एक विश्वसनीय सुरक्षा और रक्षा साझेदार के रूप में स्वीकार किया और वियतनाम के सैन्य कर्मियों के लिए भारत के प्रशिक्षण की सराहना की। एएस महावर ने भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और वियतनाम की 'चार नहीं वाली विदेश नीति के बीच समानताओं का भी उल्लेख किया और उनके कूटनीतिक नज़रिए में साझा सिद्धांतों और उनके द्विपक्षीय संबंधों के बढ़ते प्रक्षेपवक्र को रेखांकित किया।

इंडियन ओशन रिम एकेडमिक ग्रुप (आईओआरएजी/ IORAG) की 'समुद्री डोमेन जागरूकता' पर कार्यशाला, कोलंबो, श्रीलंका, 5 मार्च 2025

इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (आईओआरए) के अकादमिक समूह के तत्वाधान में श्रीलंका के विचारमंच जियोपॉलिटिकल कार्टोग्राफर द्वारा जापान के दूतावास, श्रीलंका, संयुक्त राष्ट्र के ड्रग्स और अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी) और श्रीलंकाई नौसेना के सहयोग से कोलंबो, श्रीलंका में 05 मार्च 2025 को मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस (एमडीए) पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में यूएनओडीसी, श्रीलंका नौसेना, जापान तटरक्षक बल, सूचना संलयन केंद्र– हिंद महासागर क्षेत्र (आईएफसी– आईओआर), गुरुग्राम, भारत, मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल और भारत विश्व मामलों की परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डॉ. निवेदिता रे, निदेशक (अनुसंधान) और श्री केशव वर्मा, अनुसंधान सहयोगी ने कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के दौरान डॉ. रे ने समुद्री सुरक्षा बढ़ाने और समुद्र में अच्छी व्यवस्था बनाए रखने के लिए एमडीए, क्षमता निर्माण, विश्वास निर्माण और एमडीए नेटवर्क की स्थापना में बहुपक्षीय सहयोग के महत्व पर ज़ोर दिया। श्री वर्मा ने समुद्री क्षेत्र में प्रभावी जागरूकता में अंतरिक्ष क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उद्घाटन भाषण श्रीलंका के पूर्व प्रधानमंत्री और जियोपॉलिटिकल कार्टोग्राफर के अध्यक्ष श्री रानिल विक्रमसिंघे ने दिया, जिन्होंने एमडीए में श्रीलंका की महत्वपूर्ण भूमिका और समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने के लिए उसके जारी प्रयासों को रेखांकित किया।

कार्यशाला में श्रीलंका नौसेना और यूएनओडीसी के सहयोग से कोलंबो के डिकोविटा फिशरीज़ हार्बर में आयोजित पोत बोर्डिंग, सर्च और सीज़र (वीबीएसएस/ VBSS) का प्रदर्शन भी शामिल था, जिसमें जापान, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका और भारत के प्रतिनिधि थे। कार्यशाला के समापन पर श्रीलंका के रक्षा उपमंत्री श्री अरुणा जयशेखर ने टिप्पणी की, जिन्होंने श्रीलंका में एक व्यापक समुद्री रणनीति की आवश्यकता दोहराई। प्रतिभागियों को एक अनौपचारिक बैठक के दौरान एमडीए और संबंधित विषयों पर नज़रिया साझा करने का अवसर भी मिला।

माननीय श्री अरारत मिर्जोयान, विदेश मंत्री, आर्मेनिया द्वारा 52वां सप्रू हाउस व्याख्यान, 10 मार्च 2025

10 मार्च 2025 को आर्मेनिया गणराज्य के विदेश मंत्री महामहिम श्री अरारत मिर्जोयान ने नई दिल्ली में भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) में 52वां सप्रू हाउस व्याखान दिया। उनके संबोधन का शीर्षक था "बदलते विश्व में आर्मेनिया और भारतः मजबूत होते संबंध, सुरक्षा का भविष्य," जिसमें आर्मेनिया– भारत संबंधों की उभरती गतिशीलता और व्यापक भू– राजनीतिक परिदृश्य को रेखांकित किया गया। उप महानिदेशक राजदूत एल. प्रशांत पिसे ने उद्घाटन भाषण दिया। दोनों देशों के बीच मैत्री और सहयोग संधि की 30वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित इस व्याख्यान में राजनीतिक वार्ता, व्यापार और सांस्कृतिक जुड़ाव में हुई प्रगति की समीक्षा की गई, साथ ही आईटी, फार्मास्यूटिकल्स, हरित ऊर्जा और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में व्यापक सहयोग की महत्वाकांक्षाओं को रेखांकित किया गया।

मंत्री मिर्जोयान ने आर्मेनिया– भारत संबंधों को रेखांकित करने वाले ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डाला और भारत के साथ अपने संबंधों को दीर्घकालिक नज़रिए से देखने के आर्मेनिया के रणनीतिक निर्णय पर ज़ोर दिया। उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों की मजबूती का श्रेय भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के सक्रिए प्रयासों और नेतृत्व को दिया। इस साझेदारी के ठोस परिणाम आर्थिक विकास, रक्षा सहयोग, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान– प्रदान जैसे क्षेत्रों में देखे गए।

व्याख्यान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आर्मेनिया की क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं और इसकी शांति– निर्माण पहलों को समर्पित था। मंत्री मिर्जोयान ने आर्मेनिया के "शांति और साझेदारी का नज़रिया," के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें संप्रभुता और गैर– आक्रामकता के लिए आपसी सम्मान के आधार पर अज़रबैजान के साथ शांति संधि पर बातचीत करने के प्रयास शामिल हैं। उन्होंने "क्रॉसरोड्स ऑफ पीस" प्रोजेक्ट, जिसका उद्देश्य दक्षिण काकेशस में आर्थिक एकीकरण एवं सहयोग के लिए आर्मेनिया के व्यापक प्रयास के हिस्से के रूप में क्षेत्रीय व्यापार और परिवहन संपर्क को बढ़ाना है।

भारत के अलावा, आर्मेनिया अन्य वैश्विक एवं क्षेत्रीय खिलाड़ियों के साथ संबंधों को सक्रिए रूप से मजबूत कर रहा है। मंत्री ने ईरान और जॉर्जिया के साथ आर्मेनिया के गहरे होते संबंधों, आर्मेनिया– जॉर्जिया संबंधों को रणनीतिक स्तर तक उन्नत करने और ईरान के साथ मज़बूत, स्वाभाविक रूप से संरेखित संबंधों को बनाए रखने के बारे में बात की। इसके अलावा, आर्मेनिया ने अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ सार्थक संबंध विकसित किए हैं, जैसा कि अप्रैल 2024 में त्रिपक्षीय बैठक और आर्मेनिया– अमेरिका रणनीतिक साझेदारी चार्टर पर हस्ताक्षर करके स्पष्ट होता है। यूरेशियन आर्थिक संघ में इसकी निरंतर भागीदारी और रूस, मध्य एशिया एवं चीन के साथ संबंधों को बेहतर करने के प्रयास भी आर्मेनिया की बहुआयामी विदेश नीति को दर्शाते हैं।

सीएससीएपी (CSCAP) बैठक, सिंगापुर, 10–11 मार्च 2025

एशिया– प्रशांत में जैव सुरक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा पर एशिया प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग परिषद (सीएससीएपी) अध्ययन समूह की पहली बैठक 10–11 मार्च 2025 को सिंगापुर में आयोजित की गई। प्रोफेसर अतनु बसु, वैज्ञानिक जी (सेवानिवृत्त), आईसीएमआर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी, पुणे, ने, सीएससीएपी– इंडिया की ओर से बैठक में हिस्सा लिया।

बैठक में निम्नलिखित विषयों पर विचार– विमर्श किया गया: (क) एशिया– प्रशांत में उभरते जैव सुरक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा खतरे, (ख) एशिया– प्रशांत में महामारी की तैयारी और प्रतिक्रिया, (ग) आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी के जैव सुरक्षा निहितार्थ, (घ) जैव सुरक्षा पर राष्ट्रीय रूपरेखा एवं क्षेत्रीय व्यवस्था, (ड.) जैविक हियार सम्मेलन के कार्यान्वयन का समर्थन करते सत्यापन, अनुपालन और विश्वास निर्माण उपाय और (च) एशिया– प्रशांत क्षेत्र में जैव सुरक्षा प्रशासन पर गोलमेज़ चर्चा और दक्षिण– पूर्व एशिया में उभरते जैव सुरक्षा परिदृश्य पर आरएसआईएस की रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया।

'उभरता भारत: अमृतकाल में विदेश नीति' विषय पर आईसीडब्ल्यूए का दूसरा युवा विद्वान सम्मेलन, 11 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 11 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में 'उभरता भारत: अमृत काल में विदेश नीति' विषय पर दूसरा आईसीडब्ल्यूए युवा विद्वान सम्मेनल आयोजित किया। सम्मेलन में भारत के सात विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सात विश्वविद्यालयों के युवा शोध विद्वानों ने भाग लिया, जो इस बात पर चर्चा करने के लिए एकजुट हुए कि विदेश नीति 2047 तक विकसित राष्ट्र के नज़रिए में कैसे योगदान देगी। मुख्य भाषण जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के कुलपति प्रोफेसर शांतिश्री धुलीपुडि पंडित ने दिया।

आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने अपनी शुरुआती टिप्पणी में इस बात पर प्रकाश डाला कि वर्तमान में विश्व युद्धों, गहरे ध्रुवीकरण और तीव्र भू– राजनीति से ग्रस्त है और भारतीय मानसिकता में विश्व की इस स्थिति को 'वैश्विक मंथन' के रूप में सबसे अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है क्योंकि यह हिंदू पौराणिक कथाओं के 'समुद्र मंथन' से मेल खाता है जो 'समुद्र मंथन' या सकारात्मक और नकारात्मक शक्तियों के बीच मंथन का प्रतीक है, जिससे जीवन का अमृत या बेहतर जीवन का अमृत निकलता है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री मोदी ने अब से लेकर 2047 तक के 25 वर्षों की अवधि को अमृत काल या वह अवधि बताया है जिसमें अमृत बहेगा। इस अवधि में भारत सकारात्मकता पर सवार होकर और नकारात्मकता का सामना करके और उसे भुलाकर विश्व में गहन भू– राजनीतिक मंथन के बीच अपने भाग्य को विकसित करने और फिर से परिभाषित करने का प्रयास करेगा। उन्होंने भारत के उत्थान से संबंधित दो प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा की यानि, (1) जैसे– जैसे भारत का विकास होगा, वह अकेला विकसित नहीं होगा; और (2) जैसे– जैसे भारत विकास करेगा, एक नई विश्व व्यवस्था उभरेगी– ये दोनों एक– दूसरे के सहवर्ती हैं। उन्होंने कहा कि अमृत काल की अवधि में घरेलू और विदेश नीति दोनों क्षेत्रों में नई संस्थाओं और नए लक्ष्यों का उदय होगा और साथ ही शासन एवं कूटनीति में नई आदतों का उदय होगा। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर शांतिश्री धुलीपुडि पंडित ने अपने भाषण में इस बात पर प्रकाश डाला कि अमृत काल एक परिवर्तित भारत का नज़रिया है। इस अवधि के दौरान भारत की विदेश नीति अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक स्वयं को विकसित भारत या एक विकसित भारत के रूप में स्थापित करने की दिशा में बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है और यह चरण केवल घरेलू परिवर्तन के बारे में नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत के विचार नेतृत्व को मुखर करने के बारे में है। उन्होंने चार रणनीतिक लक्ष्यों को रेखांकित किया जिन्हें भारत ने स्वयं के लिए रेखांकित किया है। पहला है– बहु– संरेखण; दूसरा है ग्लोबल साउथ के साथ संबंध। तीसरा– भारत की प्रमुख व्यापारिक बिंदुओं और ऊर्जा मार्गों के निकट भू– राजनीतिक स्थिति और अंतिम है संकट की स्थितियों में प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता बनकर नेतृत्व करना। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत की अग्रणी शक्ति बनने की आकांक्षाएं प्रभुत्व के बारे में नहीं हैं बल्कि अंतरराष्ट्रीय मामलों में अधिक जिम्मेदारियां उठाने के बारे में हैं। बाहरी प्रभाव के लिए आधार के रूप में आंतरिक शक्तिः भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था,

तकनीकी प्रगति, सैन्य आधुनिकीकरण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान इसकी विस्तारित वैश्विक उपस्थिति के लिए आधार प्रदान करते हैं। भारत की विदेश नीति परंपरा और आधुनिकता का एक गतिशील अंतर्संबंध है जो व्यावहारिक वैश्विक रणनीतियों के साथ अपने सभ्यतागत लोकाचार को मिश्रित करती है। भारत को नारीवादी सभ्यता वाला देश बताते हुए उन्होंने कहा कि अब्राहमिक धर्मों के विपरीत, हिंदू दर्शन का मानना है कि अराजकता रचनात्मकता की ओर ले जाती है। हम विश्व को द्विआधारी में नहीं बल्कि संकेंद्रित वृत्तों में देखते हैं। उन्होंने युवा विद्वानों से भारत की अनूठी परंपराओं और लोकाचार के आधार पर नई कहानियों की तलाश करने और उन्हें बनाने का आग्रह किया।

भारतीय विदेश नीति और बदलती भू– राजनीति पर पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता शिव नादर विश्वविद्यालय, नोएडा के मानविकी एवं

सामाजिक विज्ञान संकाय के एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. अतुल मिश्रा ने की। इस सत्र में जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय और शिलांग स्थित नॉर्थ– ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी के वक्ताओं ने हिस्सा लिया। वक्ताओं ने इस बात पर ज़ोर दिया कि विश्व गुरु, विश्व मित्र और विकसित भारत जैसे विचार भारत के लिए नए नहीं हैं बल्कि भू– राजनीतिक प्रतिस्पर्धाओं के कारण अंतरराष्ट्रीय प्रासंगिकता प्राप्त कर चुके हैं, जिसने वैश्विक परिदृश्य को खंडित कर दिया है। इस बात पर ज़ोर दिया गया कि एक सभ्य देश के रूप में भारत की संस्कृति उसकी विदेश नीति और शासन कला एवं शासन की परंपरा को आकार देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कहा गया कि भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति ने उसे अपने रणनीतिक प्रयासों और वैश्विक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक लाभ दिए हैं। समकालीन वास्तविकताओं के साथ तालमेल बिठाने वाला सुधारित बहुपक्षवाद एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। वैश्विक आकांक्षाओं के लिए घरेलू विरोधाभासों को दूर करने और घरेलू एवं वैश्विक रणनीतियों को समन्वित करने की आवस्यकता पर ज़ोर दिया गया।

भारतीय विदेश नीति और नेट सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत विषय पर दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता कैप्टन (एन) योगेंद्र प्रकाश शर्मा, उप निदेशक, राष्ट्रीय समुद्री फाउंडेशन, दिल्ली ने की। इस सत्र में महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम; मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी, मणिपाल और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, वडोदरा से वक्ता थे। सत्र के वक्ताओं ने बीते एक दशक में भारत के 'नेट सुर६ प्रदाता' के रूप में विकास पर चर्चा की, विशेष रूप से हिंद– प्रशांत के संदर्भ में। भारत हिंद और प्रशांत महासागर के चौराहे पर स्थित है और उसने क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने और क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखने में योगदान देने की अपनी जिम्मेदारी को बहुत जल्द समझा है। इस संदर्भ में, यह हिंद– प्रशांत क्षेत्र में द्वीप राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों को और बेहतर बना रहा है। भारत ने समुद्री सुरक्षा सहयोग में अपने योगदान में लगातार प्रगति की है। क्षेत्र में प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में भारत की बढ़ती भूमिका और उसके समुद्री डकैती विरोधी और समुद्री आतंकवाद विरोधी अभियानों पर ध्यान दिया गया। भारत– प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ भारत के रक्षा सहयोग, इसके सैन्य– से– सैन्य संबंध और भारत– प्रशांत महासागर पहल (आईपीओआई) एवं सागर जैसी पहलों पर विस्तार से चर्चा की गई ताकि एक शांतिपूर्ण, समृद्ध एवं सुरक्षित क्षेत्र के लिए इसके नज़रिए को रेखांकित किया जा सके।

भारत की विदेश नीति और विकास सहयोग विषय पर तीसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के

अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के अध्यक्ष और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. धनंजय त्रिपाठी ने की। इस सत्र में वक्ता डॉ. हरि संह गौर विश्वविद्यालय, सागर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज से थे। वक्ताओं ने इस बात पर प्रकाश डाला कि विकास सहयोग भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गया है। भारत के विकास सहयोग की गहरी ऐतिहासिक जड़ें हैं, जो प्राचीन काल से चली आ रही हैं, जब यह अपने पड़ोसियों एवं उससे परे ज्ञान के आदान– प्रदान में व्यस्त था। दक्षिण– पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार, सिल्क– रूट पर व्यापार और अफ्रीका एवं मध्य पूर्व के साथ समुद्री संपर्क भारत की सभ्यतागत पहुँच के शुरुआती उदाहरण हैं। भारत का समकालीन दृष्टिकोण दक्षिण–दक्षिण सहयोग, पारस्परिक लाभ और संप्रभुता के सम्मान के सिद्धांतों पर आधारित है। भारत की विकास साझेदारी आर्थिक निर्भरता पैदा करने की बजाय क्षमता निर्माण, मूलभूत सुविधाओं का विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को प्राथमिकता देती है। अफ्रीका के संदर्भ में यह बताया गया कि अफ्रीकी देशों के साथ विकास साझेदारी ने क्षमता निर्माण परियोजनाओं और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के माध्यम से व्यापार और आर्थिक संबंधों को मजबूत किया है, शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान– प्रदान के माध्यम से लोगों के बीच संबंधों को मजबूत किया है और गरीबी उन्मूलन एवं जलवायु परिवर्तन शमन जैसी साझा चिंताओं को दूर करने के लिए मंच प्रदान किया है।

सम्मान के साथ विकास को ग्लोबल साउथ का मुख्य उद्देश्य बताया गया। सम्मेलन में दिल्ली एनसीआर के विश्वविद्यालयों जैसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, अशोका विश्वविद्यालय, शिव नादर विश्वविद्यालय और ऐमिटी विश्वविद्यालय के छात्रों की सक्रिए भागीदारी भी देखी गई।

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग के विशेष सचिव श्री वी. श्रीनिवास और प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग (डीएआरपीजी/DARPG) और पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग (डीओपीपीडब्ल्यू) के सचिव का आईसीडब्ल्यूए का दौरा, 11 मार्च 2025

भारत सरकार के प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग एवं पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग के सचिव श्री वी. श्रीनिवास ने 11 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की। श्री वी. श्रीनिवास ने हाल ही में अंतरराष्ट्रीय प्रशासनिक विज्ञान संस्थान, ब्रुसेल्स द्वारा डीएआरपीजी के सहयोग से प्रकाशित 'विकसित भारत @2047: गवर्नेंस ट्रांसफॉर्म्ड' नाम की पुस्तक की प्रति भेंट की। डॉ. सी. के मैथ्यू, श्री एस. एन. त्रिपाठी, प्रो. सी. शीला रेड्डी और डॉ. ए. पी. सिंह द्वारा संपादित इस पुस्तक में भारत में लोक प्रशासन और शासन से संबंधित विषयों, जैसे लोकतंत्र, संविधान, विकेंद्रीकरण, लैंगिक समावेशन, सामाजिक न्याय, नागरिक सशक्तिकरण आदि पर पूर्व एवं कार्यरत सिविल सेवकों के योगदान शामिल हैं। अपर सचिव महावर ने श्री वी. श्रीनिवास को धन्यवाद दिया और इस बात पर प्रकाश डाला कि शासन और प्रशासन में भारत का अनुभव और पुस्तक में शामिल सुधार, विकसित भारत के उद्देश्य की दिशा में, ग्लोबल साउथ के देशों के साथ भारत की शक्ति को साझा करने के मामले में भी मूल्यवादन साबित हो सकते हैं।

न्यूज़ीलैंड में एमओयू साझीदारों एएनज़ेडएफ– एनज़ेडआईआरआई और आईसीडब्ल्यू के शोध संकाय के प्रतिनिधिमंडल के बीच संवादात्मक सत्र, 17 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए अनुसंधान संकाय ने 17 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में न्यूज़ी ड के अपने एमओयू साझेदारों एएनज़ेडएफ (एशिया न्यूज़ीलैंड फाउंडेशन)– एनज़ेडआईआरआई (न्यूज़ीलैंड इंडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट) प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत की। न्यूज़ीलैंड के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व एनज़ेडआईआरआई के निदेशक और वेलिंगटन के विक्टोरिया यूनिवर्सिटी में सामरिक अध्ययन केंद्र के प्रोफेसर डेविड कैपी ने किया जबकि भारतीय पक्ष का नेतृत्व आईसीडब्ल्यूए की अनुसंधान निदेशक डॉ. निवेदिता रे ने किया। प्रो. कैपी ने विदेश नीति पर न्यूज़ीलैंड के नज़रिए पर अपनी टिप्पणी दी, जिसके बाद आईसीडब्ल्यूए के शोध संकाय के सदस्यों ने भारत के अपने पड़ोसी देशों एवं हिंद– प्रशांत के साथ संबंधों पर महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाई। बातचीत के बाद प्रश्नोत्तर सत्र रखा गया था।

सुश्री ओल्हा वोरोज़बीट, विशेषज्ञ, यूक्रेनियन प्रिज़्म और अतिथि शिक्षक, यूक्रेनियन कैथलिक यूनिवर्सिटी (लविव, यूक्रेन) द्वारा संवाद, 17 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए ने विदेश नीति परिषद 'यूक्रेनियन प्रिज़्म' के सहयोग से 17 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में 'अस्थिर भू– राजनीति के युग में भारत– यूक्रेन संबंधों के नए स्तर की ओर बढ़ना' विषय पर एक वार्ता आयोजित की। उद्घाटन भाषण आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर और यूक्रेनियन प्रिज़्म की सुरक्षा अध्ययन निदेशक डॉ. हन्ना शेलेस्ट ने दिया। यह व्याख्यान यूक्रेनियन प्रिज़्म की पत्रकार और संबद्ध विशेषज्ञ सुश्री ओल्हा वोरोज़बीट ने दिया। चर्चा में यूक्रेनियन प्रिज़्म की संबद्ध विशेषज्ञ सुश्री नतालिया बुटिर्स्का ने भी भाग लिया। चर्चा में यूक्रेन की वास्तविक स्थिति और भारत– यूक्रेन द्विपक्षीय संबंधों की वर्तमान स्थिति पर ध्यान दिया गया। चर्चा के बाद प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया।

महामहिम राजदूत कैरात सरीबे, महासचिव, कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरैक्शन एंड कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेशर्स इन एशिया (सीआईसीए) का आईसीडब्ल्यूए का दौरा, 18 मार्च 2025

महामहिम राजदूत कैरात सरीबे, महासचिव, कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरैक्शन एंड कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेशर्स इन एशिया (सीआईसीए), आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर जी से सप्रू हाउस में मुलाकता की और सीआईसीए विचारमंच फोरम के साथ आईसीडब्ल्यूए के संबंधों पर चर्चा की। आईसीडब्ल्यूए 2021 से सीआईसीए विचारमंच फोरम में प्रतिनिधित्व के लिए भारत का नोडल विचारमंच है जिसे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा नामित किया गया है।

डॉ. सईद खतीबजादेह, अध्यक्ष, राजनीतिक एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (आईपीआईएस), ईरान, का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 18 मार्च 2025

ईरान के राजनीतिक और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (आईपीआईएस/IPIS) के अध्यक्ष डॉ. सईद खतीबजादेह ने अकादमिक सहयोग पर चर्चा करने के लिए 18 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक श्री एल. प्रशांत पिसे से मुलाकात की। उनके साथ आईपीआईएस के एशियी और यूरोपीय अध्ययन समूहों के प्रमुख डॉ. अलीरेज़ा खोडा घोलिपुर भी थे।

आईसीडब्ल्यूए– सीएमआई (मार्टी अहि्तसारी पीस फाउंडेशन), फिनलैंड गोलमेज़ चर्चा, 19 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए ने फिनलैंड के मार्टी अहि्तसारी पीस फाउंडेशन (सीएमआई) के सहयोग से 19 मार्च 2025 को नई दिल्ली के सप्रू हाउस में 'युद्ध में भू– राजनीतिक रुझान और संवाद एवं सहयोग के दृष्टिकोण' विषय पर गोलमेज चर्चा आयोजित किया।

उद्घाटन सत्र में आईसीडब्ल्यूए की अतिरिक्त सचिव सुश्री नूतन कपूर महावर और सीएमआई की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. जान्ने तालास ने अपने विचार व्यक्ति किए। वक्ताओं ने अपने– अपने संगठनों का परिचय दिया और अलग–अलग वैश्विक एवं क्षेत्रीय भू– राजनीतिक घटनाक्रमों पर अपने नज़रिए साझा किए। वक्ताओं ने विश्व भू– राजनीति की विखंडित और विभाजित प्रकृति पर प्रकाश डाला और उभरते विश्व व्यवस्था पर चर्चा की, जो अलग– अलग युद्धों और संकटों के मद्देनजडर आकार ले रही है। दोनों पक्षों ने इस बात पर गौर किया कि अंतरराष्ट्रीय भू– राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि के साथ– साथ बहुध्रुवीयता की ओर झुकाव भी बढ़ रहा है। साथ ही, बहुपक्षवाद का क्षरण हो रहा है जिसमें संयुक्त राष्ट्र जैसी वर्तमान बहुपक्षीय संस्थाएं युद्ध का हल करने में अप्रभावी साबित हुई हैं। इस संदर्भ में, वैश्विक शासन में सुधार के लिए सुधारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

गोलमेज चर्चा के दौरान, यूरोप, पश्चिम एशिया और दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया पर ध्यान देते हुए वैश्विक भू– राजनीति में वर्तमान रुझानों पर सीएमआई एवं आईसीडब्ल्यूए के विशेषज्ञों द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गए। सीएमआई के चर्चाकर्ताओं में डॉ. जेन तालास, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सीएमआई; श्ररी एलेक्स वर्टेनन, एशिया प्रमुख, सीएमआई; सी मिक्को पटोकैलियो, वरिष्ठ प्रबंधक, सीएमआई; और डॉ. रेनाता ड्वान, वरिष्ठ सलाहकार, सीएमआई, रहे। आईसीडब्ल्यूए के चर्चाकर्ताओं में सुश्री नूतन कपूर महावर, अपर सचिव, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. हिमानी पंत, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. अन्वेषा घोष, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. सुबोध भारती, रिसर्च एसोसिएट, आईसीडब्ल्यूए। चर्चा में यूक्रेन युद्ध, ओएससीई, यूएन और शांति स्थापना समेत यूरोपीय सुरक्षा; म्यांमार और अफ़गानिस्तान एवं दक्षिण चीन सागर में घटनाक्रम समेत भात के पड़ोस; और बंगाल की खाड़ी बहु– क्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग पहल (बिमस्टेक) और बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल (बीबीआईएन) और कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन(सीएससी) जैसी भारत की क्षेत्रीय पहलों पर ध्यान दिया गया। आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधिमंडल ने एक उत्तरदायी क्षेत्रीय और वैश्विक खिलाड़ी के रूप में भारत की भूमिका पर प्रकाश डाला और युद्ध की तुलना में शांति को प्राथमिकता देने एवं किसी भी युद्ध को हल करने के लिए समावेशी वार्ता एवं कूटनीतिक प्रयासों की वकालत करने संबंधी नई दिल्ली की स्थिति को समझाया।

प्रतिनिधिमंडल ने पड़ोस और उससे परे भारत के शांति प्रयासों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें संकट के समय देश द्वारा तत्परता से प्रदान की जाने वाली मानवीय मदद एवं संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में इसकी भूमिका शामिल है। सीएमआई प्रतिनिधिमंडल ने यूक्रेन संकट के यूरोपीय सुरक्षा ढांचे पर पड़ने वाले प्रभाव, विशेष रूप से रक्षा और सुरक्षा पर बढ़ते यूरोपीय व्यय पर पड़ने वाले प्रभाव पर बात की। फिनलैंड की हाल ही में नाटो सदस्यों की पृष्ठभूमि में, सीएमआई ने यह भी बताया कि कैसे उनके लिए तटस्थता की परंपरागत अवधारणा ध्वस्त हो गई है। दोनों पक्ष अस्पष्टता को दूर करने पर सहमत हुए, विशेष रूप से शीत युद्धों के संबंध में। समापन भाषण आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव सुश्री नूतन कपूर महावर और सीएमआई की प्रमुख कार्यकारी अधिकारी डॉ. जान्ने तालास ने दिया।

डॉ. ग्लैडेन पप्पिन– अध्यक्ष, हंगेरियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (एचआईआईए/HIIA) द्वारा वार्ता, 19 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 19 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में हंगेरियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (एचआईआईए) के अध्यक्ष डॉ. ग्लैडेन पप्पिन द्वारा 'ट्रम्प 2.0 के शासन में अमेरिका और यूरोप एवं विश्व के निहितार्थ' विषय पर वार्ता का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने की। विचार–विमर्श ट्रम्प के राष्ट्रपति पद के तहत अमेरिकी रणनीतिक समीक्षा पर केंद्रित था, जिसमें उनके प्रशासन की विदेश नीति के उद्देश्य और प्राथमिकताएं शामिल थीं। वार्ता के बाद आईसीडब्ल्यूए रिसर्च फैकल्टी के साथ संवाद सत्र हुआ।

बर्लिन में जर्मन उद्योग महासंघ (बीडीआई) की अंतरराष्ट्रीय बाजार की वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री सुज़ाना मिनाटो– टार्कलर का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 19 मार्च 2025

बर्लिन में जर्मन उद्योग महासंघ (बीडीआई) की अंतरराष्ट्रीय बाजार की वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री सुज़ाना मिनाटो– टोर्कलर ने 19 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक, राजदूत प्रशांत पिसे से मुलाकात की। इस मुलाकात में उन्होंने बदलती विश्व व्यवस्था और बदलती भू– राजनीतिक और भू– आर्थिक स्थिति, भारत की विदेश, सुरक्षा और आर्थिक नीति पर इसके प्रभाव और चीन के बढ़ते प्रभुत्व और असमान वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर भारत के दृष्टिकोण पर चर्चा की। उन्होंने ग्लोबल साउथ में भारत की भूमिका और भारत– जर्मनी व्यापार और निवेश सहयोग के ठोस क्षेत्रों, जिनमें एआई, डिजिटलीकरण और रक्षा विविधीकरण शामिल हैं, की चर्चा की। आर्थिक संबंधों और नवाचार साझेदारी को मजबूत करना चर्चा का मुख्य केन्द्र बिन्दु था।

8वीं आईसीडब्ल्यूए– आरआईएसी (रशन इंटरनेशनल अफेयर्स काउंसिल) वार्ता, 20 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए और रशन इंटरनेशनल अफेयर्स काउंसिल (आरआईएसी) ने 20 मार्च 2025 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में अपना आठवां वार्षिक संवाद आयोजित किया। इस संवाद में विश्व व्यवस्था में बदलती गतिशीलता के साथ– साथ भारत और रूस के बीच सहयोग की नई और मौजूदा सीमाओं पर भारतीय और रूसी नज़रिए को साझा करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

उद्घाटन भाषण आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर, रशन इंटरनेशनल अफेयर्स काउंसिल (आरआईएसी) के महानिदेशक डॉ. इवान टिमोफीव; भारत में रूसी दूतावास के मिशन उप– प्रमुख श्री रोमन बाबुश्किन और रूस में भारतीय दूतावास के मिशन उप प्रमुख श्री निखिलेश गिरी ने दिया। वक्ताओं ने कहा कि भारत– रूस का आपसी विश्वास और लचीलापन अनुकरणनीय है। भू– राजनीतिक उतार– चढ़ाव के बावजूद भारत और रूस ने अपने द्विपक्षीय संबंधों के दायरे का विस्तार करना जारी रखा है। भारतीय पक्ष ने अपने पड़ोस में राजनीतिक, सुरक्षा और आर्थिक स्थिति के बारे में आकलन साझा किया; रूसी पक्ष ने यूक्रेन की स्थिति और शांति की संभावनाओं, ट्रम्प की राजनीति और अमेरिका– चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के बारे में आकलन साझा किया।

पहला सत्र 'वैश्विक व्यवस्था में बदलती गतिशीलता' विषय पर था। इसकी अध्यक्षता जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के रूसी और मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र के प्रोफेसर संजय पांडे ने की। वक्ताओं में आईसीडब्ल्यूए के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार; एमजीआईएमओ विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के निदेशक डॉ. मैक्सिम सुचकोव; आईसीडब्ल्यूए की निदेशक (अनुसंधान) डॉ. निवेदिता रे; आरआईएसी के महानिदेशक डॉ. इवान टिमोफीव; और आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. हिमानी पंत शामिल थे।

वक्ताओं ने बदलती विश्व व्यवस्था पर अपने विचार साझा किए और इस बात पर सहमति जताई कि विश्व पहले से ही बहुध्रुवीय है और यह एक निरंतर विकसित होती प्रवृत्ति है। विश्व व्यवस्था महाशक्ति समीकरणों में बदलाव के साथ पुनर्संतुलन का अनुभव कर रही है। बहुपक्षवाद के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई गई और संयुक्त राष्ट्र समेत वैश्विक शासन के संस्थानों में सुधार को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। उभरती नई विश्व व्यवस्था की वांछनीय विशेषताओं पर चर्चा की गई। बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ाने में ब्रिक्स, एससीओ और जी20 जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं की भूमिका पर ज़ोर दिया गया। दोनों पक्षों ने यह भी कहा कि यूरेशिया साझा हितों वाला क्षेत्र है और इस क्षेत्र में सुरक्षा और विकास को बढ़ावा देने के लिए नज़रिया अपनाने का आह्वान किया।

संवाद का दूसरा सत्र 'भारत– रूस सहयोग के आयामः आर्थिक, ऊर्जा और संपर्क संबंधों को जोड़ना' विषय पर था। इसकी अध्यक्षता आरआईएसी की एशिया और यूरेशिया प्रोग्राम प्रमुख सुश्री जूलिया मेलनिकोवा ने की। वक्ताओं में– आरआईएसी के महानिदेशक डॉ. इवान टिमोफीव; गेटवे हाउस के वरिष्ठ फेलो श्री अमित भंडारी; मॉस्को स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में भारत अध्ययन प्रमुख एवं इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज आरएएस में वरिष्ठ अनुसंधान फेलो डॉ. लिडिया कुलिक; डॉ. हिमानी पंत, अनुसंधान फेलो, आईसीडब्ल्यूए; श्री इगोर मकारोव, प्रमुख, स्कूल ऑफ वर्ल्ड इकोनॉमी, एचएसई विश्वविद्यालय और श्री अमन कुमार, अनुसंधान एसोसिएट, आईसीडब्ल्यूए। वक्ताओं ने द्विपक्षीय व्यापार में बाधाओं को संबोधित करते हुए दोनों देशों के बीच आर्थिक जुड़ाव के दायरे को बढ़ाने पर विचार– विमर्श किया। द्विपक्षीय व्यापार में हाल की वृद्धि को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया। दोनों पक्षों ने भारत– ईएईयू एफटीए की संभावनाओं पर अपने विचार साझा किए और राष्ट्रीय मुद्राओं में निपटान और संयुक्त निवेश समेत वित्तीय सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा की। इस बैठक में अमेरिकी प्रतिबंधों के प्रभाव पर चर्चा की गई। भारत के पक्ष में रूसी आपूर्ति श्रृंखलाओं के पुनर्गठन में हाल के रुझानों पर ध्यान दिया गया। कृषि क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग और खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के अवसरों पर चर्चा की गई।

तीसरा सत्र 'भारत– रूस द्विपक्षीय सहयोग की उभरती हुई सीमाओं' पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडो– पैसिफिक स्टडीज के संस्थापक और मानद अध्यक्ष और इंडिया क्वार्टरली के संपादक प्रो. चिंतामणि महापात्रा ने की। वक्ताओं में शामिल थे डॉ. अतहर ज़फ़र, वरिष्ठ शोध फेलो, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. जूलिया मेलनिकोवा, प्रमुख, एशिया और यूरेशिया कार्यक्रम, आरआईएसी; डॉ. स्तुति बनर्जी, वरिष्ठ शोध फेलो, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. एलेक्सी कुप्रियनोव, हिंद– प्रशांत क्षेत्र केंद्र के प्रमुख, आईएमईएमओ, आरएएस; डॉ. प्रज्ञा पांडे, शोध फेलो, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. इरिना स्ट्रेलनिकोवा, एसोसिएट प्रोफेसर, एचएसई यूनिवर्सिटी और वरिष्ठ शोधकर्ता, इंस्टीट्यूट ऑफ चाइना एंड कंटेम्परेरी एशिया, आरएएस; और श्री अमन कुमार, रिसर्च एसोसिएट, आईसीडब्ल्यूए।

वक्ताओं ने भारत– रूस द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के साथ– साथ यूरेशिया में क्षेत्रीय संपर्क को बेहतर बनाने के लिए संपर्क संबंधों को बढ़ाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। वक्ताओं ने पारस्परिक लाभ और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए आर्कटिक और रूसी सुदूर पूर्व में सहयोग की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला। दोनों पक्षों ने हिंद– प्रशांत पर विचार साझा किए और अपने नज़रिए में संमिलन की तलाश की। समापन भाषण आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर और आरआईएसी के महानिदेशक डॉ. इवान टिमोफीव ने दिया।

जापान इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (जेआईआईए) के शोध अध्येता श्री यूइची योशिदा के साथ बातचीत, 21 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए ने जापान इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (जेआईआईए) के शोध अध्येता श्री युइची योशिदा की मेजबानी की। 'हिंद– प्रशांत के संदर्भ में विकसित हो रही भू– राजनीति पर जापान का नज़रिया' विषय पर अपने भाषण के दौरान श्री योशिदा ने राष्ट्रपति ट्रम्प के चुनाव के बाद अमेरिका– जापान गठबंधन में आए बदलावों और हिंद– प्रशांत क्षेत्र में जापान के सामने आने वाली चुनौतियों, जिसमें रूस और चीन शामिल हैं, को रेखांकित किया। उन्होंने युद्ध में ड्रोन जैसी नई तकनीकों के इस्तेमाल के बारे में भी बात की।

भारत और जापान के संबंधों पर विस्तार से बात करते हुए उन्होंने न केवल घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डाला, बल्कि संबंदों के राजनीतिक और रणनीतिक क्षेत्रों में निवेश करने के लिए जापान में अधिक ध्यान देने की जरूरत पर भी प्रकाश डाला। चर्चा के दौरान, उन्होंने प्रशांत द्वीप देशों के संदर्भ में हिंद– प्रशांत क्षेत्र में जापान की भूमिका, चीन– ताइवान संबंधों और उभरती प्रौद्योगिकियों और रक्षा क्षेत्र में भारत– जापान साझेदारी के लिए अवसरों एवं चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की।

एमआईटी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट (एमआईसी एसओजी) पुणे से राजनीतिक नेतृत्व और सरकार (एमपीजी 20) में मास्टर प्रोग्राम के 20वें बैच के साथ संवाद, 21 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक राजदूत प्रशांत पिसे ने एमआईटी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट, पुणे में अध्ययनरत भावी राजनेताओं के साथ वर्तमान भू– राजनीतिक एवं भू– आर्थिक स्थिति में भारत की विदेश नीति के अलग– अलग पहलुओं और चुनौतियों से निपटने के लिए भारतीय कूटनीतिक पहलों पर संवादात्मक सत्र आयोजित किया। यह एमआईटी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट, पुणे से राजनीतिक नेतृत्व और सरकार विषय में मास्टर कार्यक्रम का 20वां बैच था जो अपने अभिविन्यास कार्यक्रम के हिस्से के रूप में 21 मार्च 2025 को सप्रू हाउस, आईसीडब्ल्यूए का दौरा कर रहा था।

आर्मेनिया के एप्लायड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एपीआरआई, आर्मेनिया) के विद्वानों के साथ संवाद, 21 मार्च 2025

अप्लायड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ आर्मेनिया (एपीआरआई आर्मेनिया) के विद्वानों ने 21 मार्च 2025 को अनुसंधान संकाय के साथ संवाद करने के लिए परिषद का दौरा किया। डॉ. अतहर ज़फर, एसआरएफ, आईसीडब्ल्यूए और सुश्री नवर्द चालिक्यान, शोध अध्येता, एपीआरआई आर्मेनिया ने परिचयात्मक भाषण दिया। आईसीडब्ल्यूए से डॉ. पुनीत गौर, आरएफ; डॉ. हिमानी पंत, आरएफ; डॉ. एफआर सिद्दीकी, एसआरएफ; डॉ. लक्ष्मी प्रिया, आरएफ और श्री अमन कुमार, आरे ने संवाद में हिस्सा लिया। एपीआरआई आर्मेनिया के विशेषज्ञों में डॉ. सर्गेई मेलकोनियन और श्री डेविट एंटोनियन शामिल थे।

चर्चा में भारत– आर्मेनिया संबंधों, दक्षिण कॉकशस में हाल के घटनाक्रमों, क्षेत्रीय संपर्क, एससीओ, आर्थिक साझेदारी, बदलती भू–राजनीति, सुरक्षा और वैश्विक रणनीतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया। आईसीडब्ल्यूए के विद्वानों ने आर्मेनियाई पक्ष को मध्य एशिया, दक्षिण कॉकशस, संपर्क (चाबहार के जरिए) और यूरेशिया एवं बहुपक्षीय संस्थानों के पड़ोसी क्षेत्रों के प्रति भारत के नज़रिए के बारे में जानकारी दी। आर्मेनियाई पक्ष ने अज़रबैजान के साथ सीमा वार्ता में प्रगति और कठिनाईयों एवं तुर्किए के साथ समझौते के बारे में बात की। येरेवन के दीर्घकालिक साझेदार रूस के साथ विकसित होते संबंधों, पश्चिम के साथ उसके जुड़ाव और उसके पड़ोसियों, विशेषरूप से ईरान और तुर्किए के साथ उसके संबंधों पर भी चर्चा की गई।

डॉ. पैट्रिक कुगिएल, वरिष्ठ विश्लेषक, पीआईएसएम पोलैंड और वारसॉ यूनिवर्सिटी में व्याख्याता और सुश्री माल्गोरज़ाटा वेजिस– गोलेबियाक, निदेशक, पोलिश इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 21 मार्च 2025

पीआईएसएम के वरिष्ठ विश्लेषक और वारसॉ यूनिवर्सिटी में व्याख्याता डॉ. पैट्रिक कुगील और पोलिश संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक सुश्री माल्गोरज़ाटा वेजिस– गोलेबियाक ने 21 मार्च 2025 को आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया। आईसीडब्ल्यूए की निदेशक (शोध) डॉ. निवेदिता रे और आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. हिमानी पंत बैठक में भाग लिया। दोनों पक्षों ने वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की और आईसीडब्ल्यूए– पीआईएसएम सहयोग का विस्तार करने के लिए नई परियोजनाओं पर अपने विचार साझा किए।

'म्यांमार नैरेटिव' विचार मंच द्वारा '2025 से आगे म्यांमार: बहुध्रुवीय विश्व में चुनौतियां और अवसर' पर अंतरराष्ट्रीय चर्चा, नेपीताव, म्यांमार, 21 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए के शोध विद्वान डॉ. श्रीपति नारायण, शोध अध्येता, और डॉ. मेंहदी हुसैन, शोध सहयोगी ने 21 मार्च 2025 को ने पी ताव में नव स्थापित म्यांमार नैरेटिव विचारमंच द्वारा आयोजित '2025 से आगे म्यांमार: बहुध्रुवीय विश्व में चुनौतियां और अवसर' विषय पर अंतरराष्ट्रीय फोरम में भाग लिया। एक दिवसीय फोरम का उद्घाटन म्यांमार के राज्य प्रशासन परिषद के अध्यक्ष एवं प्रधानमंत्री सीनियर जनरल मिन आंग हलिंग और म्यांमार के सूचना मंत्री यू माउंग माउंग ओह्न एवं अन्य गणमान्यों ने किया।

भारत, रूस, चीन, इटली, नेपाल, जापान, थाईलैंड और म्यांमार के भू– राजनीतिक और भू– अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों ने चर्चा में भाग लिया। प्रधानमंत्री और एसएसी अध्यक्ष ने बहुध्रुवीय विश्व में उभरते अवसरों के बीच राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए अपनी विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता के लिए म्यांमार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि म्यांमार बहुदलीय संघीय लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत में पोलैंड के मिशन प्रमुख डॉ. पिओट्र एंटोनी स्वितल्स्की का आईसीडब्ल्यूए दौरा, 24 मार्च 2025

भारत में पोलैंड के मिशन प्रमुख डॉ. पियोट्र एंटोनी स्वितल्स्की ने 24 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक राजदूत प्रशांत पिसे से मुलाकात की और आपसी हितों के मुद्दों पर चर्चा की, जिसमें अकादमिक सहयोग को मजबूत करना भी शामिल था।

जॉर्डन के राजदूत, महामहिम श्री युसुफ मुस्तफा अली अब्देल गनी, का, आईसीडब्ल्यूए दौरा, 24 मार्च 2025

जॉर्डन के राजदूत महामहिम श्री यूसुफ मुस्तफा अली अब्देल गनी ने अकादमिक सहयोग समेत आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए 24 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक, राजदूत प्रशांत पिसे से मुलाकात की।

'हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में नीली अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को उजागर करनाः आईओआरए के लिए भविष्य की राह' विषय पर गोलमेज़ चर्चा, 25 मार्च 2025

"हिंद महासागर क्षेत्र (ओआर) में नीली अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को उज़ागर करनाः आईओआरए के लिए भविष्य की राह" विषय पर 25 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में गोलमेज चर्चा का आयोजन किया गया। स्वागत भाषण आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव सुश्री नूतन कपूर महावर ने दिया। गोलमेज सम्मेलन की अध्यक्षता राजदूत राजीव भाटिया, पूर्व महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए और भारत के पूर्व राजदूत ने किया। मुख्य वक्ता थे विकासशील देशों के अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली (आरआईएस) के प्रोफेसर प्रो. एस. के. मोहंती। चर्चा में शामिल थे भूगोल और आप (जी'एनवाई/ G'nY), की प्रधान संपादक, सागा की अध्यक्ष और लाइट्स की महासचिव डॉ. सुलग्ना चट्टोपाध्याय; डॉ. जेसिका फ्रेज़र, वरिष्ठ व्याख्याता, नेल्सन मंडेला यूनिवर्सिटी (एनएमयू), दक्षिण अफ्रीका और एडमिरल जयंता परेरा (सेवानिवृत्त), श्रीलंका नौसेना।

चर्चा इस बात पर केंद्रित थी कि भारत की अध्यक्षता में, हम आईओआर की बेहतर सुरक्षा और समृद्धि के लिए एवं हिंद महासागर को एक स्वतंत्र, मुक्त एवं समावेशी स्थान बनाने के लिए समूह में सहयोग को और मजबूत होते हुए देखने की आशा करते हैं। भारत की अध्यक्षता जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रदूषण, बहुत अधिक मात्रा में मछली पकड़ने और आईयूयू मछली पकड़ने, समुद्र के संसाधनों के अत्यधिक दोहन और जैव विविधता के नुकसान से पैदा चुनौतियों का समाधान करने की कोशिश करेगी। नीली अर्थव्यवस्था का आकलन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीडीपी, व्यापार, रोज़गार, उच्च विकास और लचीलेपन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। वर्तमान राष्ट्रीय आय लेखा एनएसी, आईएसआईसी जैसे क्षेत्रों में गतिविधियों को पकड़ने में असमर्थ है। यह कहा गया कि आईओआरए के लिए हमें एकीकृत शासन मॉडल की

जरूरत है जो जलवायु परिवर्तन, भूमि उपयोग नीति, सामाजिक– आर्थिक स्थितियों, प्लास्टिक अपशिष्ट और प्रदूषण के प्रभाव को ध्यान में रखता हो।

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) और क्रिस्तु जयंती कॉलेज (केजेसी/ KJC) के बीच समझौता ज्ञापन का निष्कर्ष, 25 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए, आईसीडब्ल्यूए अधिनियम, 2001 के तहत राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, जो नई दिल्ली में है, और 1999 में स्थापित एवं बेंगलुरु में स्थित क्रिस्टू जयंती कॉलेज (केजीसी), जो बेंगलुरु नॉर्थ यूनिवर्सिटी से संबद्ध है, जिसे यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त है और दिसंबर 2021 में एनएएसी द्वारा 'A++ ग्रेड' के साथ पुनः मान्यता प्राप्त है, ने, एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौता ज्ञापन में अंतरराष्ट्रीय मामलों और भारतीय विदेश नीति में जागरूकता एवं ज्ञान के विस्तार के लिए सेमिनार, अध्ययन और प्रकाशन जैसी संयुक्त गतिविधियों के संचालन में सहयोग का प्रावधान है, साथ ही केजेसी के छात्रों को इंटर्नशिप की पेशकश भी की गई है।

आईसीडब्ल्यूए और केजेसी के बीच 25 मार्च 2025 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए जो तीन वर्षों की अवधि के लिए वैध रहेगा।

'आखिरकार कमजोर पड़ जाना? 2025 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और गतिशीलता पर पुनर्विचार' विषय पर पैनल चर्चा, 26 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए ने 26 मार्च 2025 को सप्रू हाउस में एक उच्च स्तरीय पैनल चर्चा आयोजित की, जिसमें महामारी के बाद और भू– राजनीतिक रूप से बदलते विश्व में प्रवासन और गतिशीलता पर विकसित हो रहे विमर्श का गंभीरता से पता लगाया जाएगा।

सत्र की अध्यक्षता राजदूत संजय भट्टाचार्य, जिंदल स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में डिप्लोमैटिक प्रैक्टिस के प्रोफेसर और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व सचिव (प्रवासी भारतीय मामला) ने की। पैनल में प्रमुख प्रवासन विद्वान और व्यवसायी शामिल थे: ग्लोबल रिसर्च फोरम ऑन डायस्पोरा एंड ट्रांसनेशनलिज़्म (जीआरएफडीटी) के अध्यक्ष और मेट्रोपोलिस एशिया– पेसेफिक (एमएपी) के सह– संयोजन प्रो. बिनोद खदरिया; श्री संजय अवस्थी, कार्यालय प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम), भारत; प्रोफेसर एस. इरुदया राजन, अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय प्रवासन एवं विकास संस्थान (आईआईएमएडी); और श्री करण दीप सिंह, स्वतंत्र पत्रकार और द न्यूयॉर्क टाइम्स के पूर्व स्टाफ रिपोर्टर। स्वागत भाषण आईसीडब्ल्यू की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने दिया। कार्यक्रम का समन्वय आईसीडब्ल्यूए के सेंटर फॉर माइग्रेशन, मोबिलिटी एंड डायस्पोरा स्टडीज़ (सीएमएमडीएस) की सलाहकार और शोध प्रमुख सुश्री अंबी ने किया।

पैनल ने प्रवासन और गतिशीलता की वर्तमान परिभाषाओं को समझने और उन पर पुनर्विचार करने, चक्रीय प्रवासन की गतिशीलता, वैश्विक कार्यस्थल में चुनौतियों और प्रवासी कल्याण एवं समावेशन को बढ़ाने की जरूरत पर महत्वपूर्ण चर्चा की। वक्ताओं ने समान और भविष्य के लिए तैयार प्रवासन शासन रूपरेखा के निर्माण हेतु मूल एवं गंतव्य दोनों देशों के बीच मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग और संयुक्त उत्तरदायित्व के महत्व पर ज़ोर दिया।

राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 9-10 जनवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए ने अपने आउटरीच कार्यक्रम के तहत दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन 'मोदी 3.0 में भारत की विदेश नीति: चुनौतियां और अवसर' (09–10 जनवरी 2025) का समर्थन किया। इस सम्मेलन में देश भर के विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ– साथ कई वरिष्ठ शिक्षाविदों एवं विद्वानों ने भाग लिया। परिषद का प्रतिनिधित्व वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. स्तुति बनर्जी ने किया, जिन्होंने समापन सत्र में विशेष भाषण दिया। परिषद में डॉ. सेबेस्टियन डोमज़ाल्स्की, प्रभारी, पोलैंड दूतावास, नई दिल्ली; प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव, कुलपति, एमजीसीयू, बिहार; और प्रो. प्रकाश सिंह, निदेशक, साउथ कैंपस, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने भी अपने विचार साझा किए। सम्मेलन में बीते दशक में भारत की विदेश नीति की पड़ताल की गई और 2047 तक 'विकसित भारत' के सपने को साकार करने में योगदान देने के लिए भारत की विदेश नीति के समक्ष आने वाली चुनौतियों एवं अवसरों को समझने का प्रयास किया गया।

सेंट जेवियर्स कॉलेज (स्वायत्त), मुंबई द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (हिंदी में), 20–21 जनवरी, 2025

20–21 जनवरी 2025 को सेंट जेवियर कॉलेज (स्वायत्त), मुंबई में 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर हिंदी में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। आईसीडब्ल्यूए, नई दिल्ली ने इस सम्मेलन को प्रायोजित किया था। यह आयोजन आईसीडब्ल्यूए, नई दिल्ली; हिंदी विभाग, सेंट जेवियर कॉलेज, मुंबई; केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का संयुक्त प्रयास था। उनके

सामूहिक प्रयासों ने इसके आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे हिंदी के प्रचार– प्रसार के लिए साझा प्रतिबद्धता प्रदर्शित हुई। आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व करने वाले डॉ. पुनीत गौर ने सम्मेलन के विषय और इसकी समकालीन प्रासंगिकता का परिचय दिया। उन्होंने भारतीय परिप्रेक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर परिषद के शोध, विशेष रूप से हिंदी भाषा में किए गए कार्य को साझा किया जो प्रवासी भारतीयों तक पहुंचने में सहायक है।

मुख्य वक्ता पुणे के प्रख्यात हिंदी लेखक डॉ. दामोदर खडसे थे, जिनके शब्दों ने श्रोताओं को बहुत प्रेरणा दी। प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र शिंदे ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। मॉस्को, रूस से सुश्री लिलिया खोवाएवा; मॉरिशस से डॉ. अलका डनपथ; प्रो. फत्ता राम नायक; डॉ. आशा नैथानी दयामा (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी) और कोलंबो, श्रीलंका से डॉ. शिरीन कुरैशी जैसे प्रतिष्ठित वक्ताओं ने उद्घाटन सत्र में अपने विचार साझा किए, जिससे श्रोता प्रेरित और उत्साहित हुए।

यह सम्मेलन तीन समानांतर सत्रों (कुछ छह) में आयोजित विविध चर्चाओं का मंच रहा, जिसमें जिमखाना में एक विशेष योग सत्र भी आयोजित किया गया था। मुंबई विश्वविद्यालय के कला संकाय के डीन प्रोफेसर डॉ. अनिल सिंह समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। उपप्राचार्य (अकादमिक) प्रोफेसर डॉ. करुणा गोकर्ण ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सम्मेलन में देश– विदेश से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिन्होंने विभिन्न विषयों पर बौद्धिक रूप से उत्तेजक चर्चाओं में भाग लिया।

यूजीसी सेंटर फॉर मैरीटाइम स्टडीज़, पांडिचेरी विश्वविद्यालय द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 29–30 जनवरी 2025

29–30 जनवरी 2025 को, आईसीडब्ल्यूए ने यूजीसी सेंटर फॉर मैरीटाइम स्टडीज़, पॉन्डिचेरी यूनिवर्सिटी और इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च के साथ मिलकर #Andaman and #Nicobar द्वीप श्रृंखला पर गहन चर्चा की। डॉ. श्रीपति नारायणन, आरएफ, आईसीडब्ल्यूए ने उद्घाटन सत्र में रणनीतिक स्थान पर प्रकाश डाला और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की पारिस्थितिकी एवं पर्यावरणीय संवेदनशीलता पर भी बात की। एक तकनीकी सत्र के दौरान, डॉ. श्रीपति ने भारत की विदेश नीति में अंडमान और निकोबार की भूमिका पर विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशियाई देशों एवं भारत की पड़ोसी प्रथम नीति, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, सागर एवं हिंद– प्रशांत महासागर पहल के संबंध में, बात की।

एनआईएएस, बेंगलुरु और महाराजा कॉलेज, मैसूर विश्वविद्यालय एवं पांडिचेरी विश्वविद्यालय, मैसूर द्वारा पहला एनआईएएस वार्षिक म्यांमार सम्मेलन '2025 में म्यांमार: आंतरिक संकट और विदेशी संबंध', 29–30 जनवरी 2025

यूजीसी सेंटर फॉर मैराटाइम स्टडीज ने भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषज (सीएसएसआर) के सहयोग से 29-30 जनवरी 2025 को पुडुचेरी में भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूहः बहुआयामी परिप्रेक्ष्य शीर्षक से डेढ़ दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। डेढ़ दिवसीय संगोष्ठी में विद्वानों एवं विशेषज्ञों की भागीदारी देखी गई।

उद्घाटन भाषण राजदूत राजीव भाटिया ने दिया और मुख्य भाषण डॉ. (श्रीमती) मालिनी वी. शंकर, आईएएस (सेवानिवृत्त), कुलपति, भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय, चेन्नई ने दिया। इसके बाद चिंतन अनुसंधान फाउंडेशन, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री शिशिर प्रियदर्शी और नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर के ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के प्रोफेसर एवं डीन प्रोफेसर अभय कुमार सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में भाषण दिया। आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व करने वाले शोध अध्येता डॉ. श्रीपति नारायणन ने विशेष टिप्पणी की। इस सम्मेलन में दिल्ली के साथ–साथ पूरे देश के संस्थानों के शोधकर्ताओं एवं विद्वानों ने भाग लिया।

केओएनजीयू इंजीनियरिंग कॉलेज, पेरुंदुरई, इरोड, तमिलनाडु द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 30–31 जनवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से, कोंगु इंजीनियरिंग कॉलेज, पेरुंदुरई, इरोड, तमिलनाडु के मैनेजमेंट स्टडीज विभाग ने 30–31 जनवरी 2025 को '21वीं सदी में भारत की विदेश नीति: वैश्विक चुनौतियों का समाधान और अवसर' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. हिमानी पंत ने विशेष भाषण दिया जिसमें उन्होंने भारत की विदेश नीति प्राथमिकताओं और वैश्विक विकास के प्रति नज़रिए पर प्रकाश डाला। सत्र में स्वागत भाषण कोंगु इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रबंधन अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पी. कार्तिकेयन, कोंगु इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल प्रो. वी. बालुसामी और कोंगु इंजीनियरिंग कॉलेज के संवाददाता श्री ए. के. इलांगो ने दिया। मुख्य भाषण जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. शांतिश्री धुलीपुडी पंडित ने दिया।

माता सुंदरी कॉलेज फॉर विमेन, माता सुंदरी लेन, नई दिल्ली द्वारा एक दिवसीय अंतर महाविद्यालय वाद– विवाद प्रतियोगिता, 3 फरवरी 2025

दिल्ली विश्वविद्यालय के माता सुंदरी कॉलेज फॉर विमेन के राजनीति विज्ञान विभाग, आईक्यूएसी और आंतरिक समिति ने आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 3 फरवरी 2025 को आईसीडब्ल्यू की ' विदेश नीति जागरूकता योजना' के तहत 'भारतः एक वैश्विक शक्ति या विकासात्मक भागीदार' विषय पर अंतर– कॉलेजिएट वाद– विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। आईसीडब्ल्यूए के निदेशक श्री हितेश राजपाल ने मुख्य भाषण दिया, छात्रों और शिक्षकों से बातचीत की और वाद– विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार दिए। स्वागत भाषण प्रो.(डॉ.) हरप्रीत कौर, चेयरपर्सन/ प्रिंसिपल, माता सुंदरी कॉलेज फॉर विमेन और प्रो. माधुरी शर्मा ने दिया। रोचक वाद– विवादों के निर्णायक रहे– प्रो. शीतल शर्मा, प्रो. महेश रंजन देबता और डॉ. गुरदीप कौर। वाद– विवाद प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के अलग– अलग कॉलेजों से विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया और अपने तर्क प्रस्तुत किए।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, राजनीति विज्ञान विभाग, जंत, पाली गांव, महेन्द्रगढ़, हरियाणा द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 6–7 फरवरी 2025

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, जंत, पाली गांव, महेन्द्रगढ़, हरियाणा के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा 6–7 फरवरी 2025 को आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 'वी, द पीपल@75: नेविगेटिंग सोशल जस्टिस एंड ग्लोबल पीस' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर टंकेश्वर कुमार, राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष राजीव कुमार सिंह, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय से प्रोफेसर मनीष उपस्थित थे। डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, आरएफ आईसीडब्ल्यूए ने संगठन का प्रतिनिधित्व किया और आईसीडब्ल्यूए एवं भारतीय विदेश नीति पर कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग एरियाज़ (आईएसडीए) (सोसायटी के तहत पंजीकृत स्वायत्त निकाय), कौडियार, तिरुवनंतपुरम, केरल द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 13–14 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 13–14 फरवरी 2025 को तिरुवनंतपुरम के केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल में 'भारत के पड़ोस में हालिया घटनाक्रमः पहलू और निहितार्थ' शीर्षक से दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी को विकासशील क्षेत्रों के अध्ययन संस्थान (आईएसडीए), कौडियार, तिरुवनंतपुरम का सहयोग मिला। इस सेमिनार का उद्घाटन केरल के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने किया और केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. विंसेंट मैथ्यू और राजदूत (सेवानिवृत्त) टी. पी. श्रीनिवासन ने अध्यक्षीय भाषण दिया। श्री गिरिशंकर, अनुसंधान सहयोगी, आईसीडब्ल्यूए ने उद्घाटन सत्र में अभिनंदन भाषण दिया, जिसमें उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन के तहत क्षेत्रीय सहयोग के लिए भारत की प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया और दक्षिण एशिया में समावेशी विकास और स्थिरता की वकालत की।

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ एंड डायस्पोरा द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 17–18 फरवरी 2025

17 और 18 फरवरी 2025 को, आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ एंड डायस्पोरा (एसआईएसडी), गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद ने 'इंडिया आइडियाज@2047: इमर्जिंग कंटूर्स ऑफ फॉरेन पॉलिसी एंड सिक्योरिटी स्ट्रैटेजीज' पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस अवसर पर प्रोफेस,र लाखाजी भाई मालव और प्रोफेसर दर्शन भट्ट का मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रोफेसर संजीव शर्मा ने उद्घाटन भाषण दिया। आईसीडब्ल्यूए के आरए मुकेश कुमार ने भारत की विदेश नीति और रक्षा एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में इसकी बढ़ती घरेलू क्षमताओं पर श्रोताओं को संबोधित किया।

रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के एमओयू साझीदार द्वारा एक दिव्सीय सेमिनार, 18 फरवरी 2025

रक्षा विभाग और राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन, पंजाव विश्वविद्यालय ने आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 18 फरवरी 2025 को चंडीगढ़ में ग्रेटर पश्चिम एशियाई क्षेत्र के उभरते सुरक्षा प्रतिमानों पर केंद्रित एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया और इस संवाद से निम्नलिखित बातें सामने आईं: इस बात को लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या सभी छह जीसीसी देश निकट भविष्य में अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर करेंगें। बहरीन और यूएई ने समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जबकि सऊदी अरब 7 अक्टूबर को हमास ऑपरेशन से पहले हस्ताक्षर करने की कगार पर था। क्षेत्र में आर्थिक विविधीकरण की गति एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है और हाल ही में हमने इनमें से अधिकांश देशों, विशेष रूप से जीसीसी देशों को हाइड्रोकार्बन पर अपनी निर्भरता कम करने पर ध्यान केंद्रित करते देखा है। स्थानीय स्तर पर नवीकरणीय और स्वच्छ ऊर्जा खपत को बढ़ावा देने एवं हरित हाइड्रोजन पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा, देश पर्यटन और शिक्षा ६त्र को बढ़ावा देकर अपनी अर्थव्यस्था में विविधता ला रहे हैं। असद का पतन एक अभूतपूर्व और परिणामकारी घटना है, जो तुर्किए के पुनः उभरने, ईरान के प्रतिरोध की धुरी को तोड़ने और क्षेत्र में मास्को के प्रभाव में सेंध लगाने के प्रयासों को रेखांकित करती है।

राष्ट्रीय स्तर पर हार्ड– कोर सुरक्षा के संदर्भ में, बाहरी कारकों पर अपनी निर्भरता के बावजूद, ये देश अपने रक्षा उत्पादन को स्थानीय बनाने का लक्ष्य बना रहे हैं, जैसा कि उनके नज़रिए से पता चला। और भारत के लिए क्षेत्रीय देशों के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाने की संभावना है। अंतरिक्ष भारत के लिए सहयोग का एक और क्षेत्र है। हाल ही में खाड़ी देशों ने अंतरिक्ष कार्यक्रमों में रुचि दिखाई है, संयुक्त अरब अमीरात ने 2020 में होप प्रोब लॉन्च किया है और 2028 में क्षुद्रग्रह बेल्ट के लिए मिशन शुरू करने की तैयारी की है। इस क्षेत्र में मानव सुर६ एक प्रमुख चिंता का विषय है और हम गाज़ा युद्ध, सीरियाई संकट और यमन संघर्ष के कारण लोगों की मृत्यु और पीड़ा से अवगत हैं।

यमन दुनिया के सबसे खराब मानवीय संकट से गुज़र रहा है, जिसमें 25 लाख से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है। यमन में दशकों से चल रहे गृहयुद्ध ने 4.5 मिलियन लोगों को उनके घरों से विस्थापित कर दिया है और 17 मिलियन से ज्यादा लोगों को भयंकर भूखमरी में धकेल दिया है। इसके अलावा, 12 मिलियन बच्चों को भोजन, पानी, आश्रय और दवा की जरूरत है। अनुमान है कि सीरियाई युद्ध में 0.6 मिलियन लोगों की जान चली गई।

ऐमिटी स्कूल ऑफ लैंग्वेज, ऐमिटी विश्वविद्यालय, लखनऊ परिसर, उत्तर प्रदेश द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 20–21 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से, ऐमिटी स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज, लखनऊ ने 20 फरवरी 2025 को 'भारतीय ज्ञान प्रणाली और विदेश नीति' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की मेज़बानी की, जिसमें वर्तमान अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक रणनीतियों को आकार देने में भारत की बौद्धिक परंपराओं की व्यापक प्रासंगिकता का पता लगाने के लिए डोमेन विशेषज्ञों, विद्वानों और नीति निर्माताओं को एक साथ लाया गया।

इस सम्मेलन में आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व अनुसंधान निदेशक डॉ. निवेदिता रे ने किया। उन्होंने सम्मेलन के विषय पर बात की कि कैसे भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय विदेश नीति और दुनिया के बारे में हमारी समझ के साथ जुड़ती है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि विदेश नीति के भारतीय आख्यान को बढ़ावा देने में आईसीडब्ल्यूए का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली में योगदान दे रहा है। राजदूत दीपक वोहरा, श्री राय महिमापत रे, प्रोफेसर रजनीश कुमार मिश्रा, जेएनयू, और प्रोफेसर कृष्ण मोहन पांडे, बीएचयू ने उद्घाटन और तकनीकी सत्रों में मुख्य भाषण और विषय– आधारित भाषण दिए। सम्मेलन का उद्देश्य भारत के लोकाचार और मूल्यों के आधार पर वैश्विक कूटनीति में भारत की भूमिका को मजबूत करना था, जिससे भविष्य के शोध और रणनीतिक साझेदारी का मार्ग प्रशस्त हो सके।

क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु और चेन्नई सेंटर फॉर चाइना स्टडीज़ (सी3एस) द्वारा एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 24 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए की अतिरिक्त सचिव नूतन कपूर महावर ने 24 फरवरी 2025 को आईसीडब्ल्यूए के एमओयू साझेदार क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु और चेन्नई सेंटर फॉर चाइना स्टडीज (सी3एस) द्वारा सह– आयोजित 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी का एक दशकः भारत– आसियान संबंधों और क्षेत्रीय गतिशीलता पर प्रभाव' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दिया।

अपने संबोधन में उन्होंने आसियान और दक्षिण– पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के संबंधों के बढ़ते महत्व, पारंपरिक और गैर– परंपरागत सुरक्षा क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने में भारत की एक्ट ईस्ट नीति के दस वर्षों की उपलब्धियों के अलावा भारत के हिंद– प्रशांत विज़न और हिंद– प्रशांत पर आसियान आउटलुक और भविष्य की राह राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तालमेल पर ध्यान दिया। चेन्नई स्थित मलेशिया के महावाणिज्यदूत महामहिम श्री श्रवण कुमार कुमारवासगम ने विशेष संबोधन दिया। मलेशिया वर्तमान में आसियान और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (एडीएमएम) ढांचे की अध्यक्षता कर रहा है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ के सेंटर फॉर अफ्रीकन स्टडीज़ द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 24–25 फरवरी 2025

24–25 फरवरी 2025 को, आईसीडब्ल्यू ने अफ्रीकी अध्ययन केंद्र, जेएनयू के सहयोग से 'भारत– अफ्रीका साझेदारी में उभरती गतिशीलताः चुनौतियां और मुद्दे' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर उम्मू सलमा बावा, डीन (कार्यवाहक), एसआईएस, जेएनयू, और प्रोफेसर जे. एम. मूसा, अध्यक्ष, सेंटर फॉर अफ्रीकन स्टडीज ने मुख्य भाषण दिया। उद्घाटन सत्र में राजदूत प्रोफेसर अनिल सूकलाल, भारत में दक्षिण अफ्रीका के उच्चायुक्त (सम्मानित अतिथि) और श्री सेवाला नाइक मुडे, आईएफएस, अतिरिक्त सचिव (मध्य और पश्चिम अफ्रीका), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार (मुख्य अतिथि) उपस्थिति थे।

नंदिनी खंडेवाल, आरआई, आईसीडब्ल्यूए ने विकसित होते भारत– अफ्रीका संबंधों पर एक विशेष टिप्पणी की और 'अफ्रीका की दुर्लभ पृथ्वी क्षमता को खोलनाः भारत मलावी रणनीतिक जुड़ाव के लिए अवसर' शीर्षक से एक शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने दुर्लभ पृथ्वी तत्वों समेत महत्वपूर्ण खनिज क्षेत्र में भारत और अफ्रीका के बीच एकीकृत आपूर्ति श्रृंखलाओं की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, भारत– मलावी साझेदारी का प्रयोग कर चीन के प्रभुत्व को संबोधित किया।

दक्षिण एशिया फाउंडेशन, वाराणसी, यूपी द्वारा आईआईसी, नई दिल्ली में दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन, 26–27 फरवरी 2025

26–27 फरवरी 2025 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 'भारत– नेपाल संबंधों और पड़ोसी कूटनीति को बढ़ावा देनाः बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता' आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, नेपाल और साउथ एशिया फाउंडेशन ने संयुक्त रूप से आईसीडब्ल्यूए, काठमांडू में भारतीय दूतावास और नई दिल्ली में नेपाल के दूतावास के सहयोग से किया था। इस कार्यक्रम में विविध प्रकार की पैनल चर्चाएं हुईं। इस कार्यक्रम में विविध प्रकार की पैनल चर्चाएं हुई।नूतन कपूर महावर, अतिरिक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. सुबोध चंद्र भारती, अनुसंधान सहयोगी, आईसीडब्ल्यूए ने परिषद का प्रतिनिधित्व किया।

नूतन कपूर महावर ने उद्घाटन भाषण देते हुए समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों और विदेश नीतियों में बौद्ध विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच संबंधों के साथ-साथ भारत और नेपाल की साझा विरासत पर भी जोर दिया। डॉ. सुबोध ने 'बौद्ध सर्किट के माध्यम से सीमाओं को जोड़ना' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र के प्रमुख वक्ताओं में भारत में नेपाल के राजदूत महामहिम डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा, नेपाल में भारत के पूर्व राजदूत राजदूत मंजीव सिंह पुरी, नालांदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अभय कुमार सिंह, लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सुवर्ण लाल बजराचार्य (वर्चुअल संबोधित); और बीएचयू में यूनेस्को शांति अध्यक्ष प्रोफ़ेसर प्रियंकर उपाध्याय शामिल थे। पैनल चर्चा के दौरान अन्य उल्लेखनीय वक्ताओं में नेपाल के पूर्व विदेश मंत्री श्री प्रदीप कुमार ग्यावली, नेपाल के संसद सदस्य डॉ. प्रकाश शरण महत और डॉ. स्वर्णिम वागले, एमपीआईडीएसए से डॉ. उत्तम कुमार सिन्हा, जेएनयू से प्रो. संजय के. भारद्वाज, राजदूत पंकज सरन और भारत के अलग– अलग विश्वविद्यालयों जैसे जेएनयू, बीएचयू, डीयू और एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी के विभिन्न जाने– माने वक्ता शामिल थे।

इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंडो– पेसेफिक स्टडीज़ (आईसीआईपीएस) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, द्वारा एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 27 फरवरी 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 27 फरवरी 2025 को इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंडो– पेसेफिक स्टडीज़ (आईसीआईपीएस) और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा हाइब्रिड मोड में 'भारत और आईओआरएः भविष्य की राह' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। विदेश मंत्रालय की संयुक्त सचिव (हिंद– प्रशांत) सुश्री परमिता त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन को वर्चुअली संबोधित किया। भारत में दक्षिण अफ्रीका गणराज्य के उच्चायुक्त महामहिम प्रोफेसर अनुल सूकलाल ने भी उद्घाटन सत्र में सम्मेलन को वर्चुअली संबोधित किया।

डॉ. प्रज्ञा पांडे, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए ने परिषद का प्रतिनिधित्व किया और उद्घाटन सत्र में व्याख्यान दिया, जहाँ उन्होंने सम्मेलन के विषय पर बात की, जिसमें संस्थागत जुड़ाव, क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने और हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में समग्र, एकीकृत तरीके से सतत विकास में आईओआरए की महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया। उन्होंने यह भी बताया कि भारत ने आईओआरए की स्थापना के बाद से इसमें सक्रिए भूमिका निभाई है और इस साल के अतं में, भारत एक बार फिर आईओआरए की अध्यक्षता संभालेगा।

सम्मेलन में चर्चा में इस बात पर जोर दिया गया कि भारत के लिए आईओआरए महत्वपूर्ण है और भारत आईओआरए के लिए महत्वपूर्ण है। वक्ताओं ने 1997 से आईओआरए के प्रदर्शन का आलोचनात्मक विश्लेषण करने पर भी ध्यान दिया और हिंद– प्रशांत पर आईओआरए के नज़रिए के साथ– साथ दूसरे क्षेत्रीय समूहों के नज़रिए एवं हिंद– प्रशांत पर अलग– अलग देशों की स्थिति पर विचार– विमर्श किया।

डी.डी. कोसाम्बी स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस एंड बिहेवोरियल स्टडीज़, गोवा विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान कार्यक्रम द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, 8–9 मार्च, 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से, 8–9 मार्च 2025 को गोवा विश्वविद्यालय में 'वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्थाः वर्तमान प्रक्षेप पथ, भविष्य की चुनौतियाँ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन गोवा विश्वविद्यालय के डी.डी. कोसाम्बी

स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज एंड बिहेवियरल स्टडीज द्वारा किया गया था। अनुसंधान सहयोगी एवं सोशल मीडिया समन्वयक सुश्री अवनी सबलोक ने परिषद का प्रतिनिधित्व किया और सम्मेलन के विषय पर विशेष टिप्पणी दी।

उन्होंने इस बात पर विचार– विमर्श किया कि व्यापार युद्ध, उभरती हुई प्रौद्योगिकियों, डिजिटल मुद्राओं के निर्माण और बहुपक्षीय प्रणाली में सुधार के विषयों पर चल रहे भू– राजनीतिक तनावों के मद्देनज़र वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था (जीपीई) की भविष्य की संभावनाओं की जांच की जानी चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि भारत की विकास करती अर्थव्यवस्था, रणनीतिक साझेदारियां और ग्लोबल साउथ में नेतृत्व वैश्विक आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृश्य के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। डॉ. राहुल मुखर्जी, प्रोफेसर और अध्यक्ष, दक्षिण एशिया की आधुनिक राजनीति, हीडलबर्ग यूनिवर्सिटी, जर्मनी ने 'वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यस्था में भारत का उदयः अंतर्निहित उदारवाद का महत्व' विषय पर उद्घाचन भाषण दिया।

क्रिस्टू जयंती कॉलेज (स्वायत्त), के. नारायरणपुरा, कोथनूर, पीओ बेंगलुरु, कर्नाटत द्वारा एदक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 11 मार्च 2025

11 मार्च 2025 को आईसीडब्ल्यूए ने क्रिस्टू जयंती कॉलेज (स्वायत्त), बेंगलुरु के साथ मिलकर 'लिंग मुख्यधाराकरण– दक्षिण एशिया के संदर्भ में नारीवादी विदेश नीति नज़रिया' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की मेज़बानी की। क्रिस्टू जयंती कॉलेज (स्वायत्त) द्वारा आयोजित दक्षिण एशिया के संदर्भ में लिंग मुख्यधाराकरण– नारीवादी विदेश नीति नज़रिया पर यह 11वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन वैश्विक विशेषज्ञों, विद्वानों और चिकित्सकों को एक साथ एक मंच पर लाया। सुश्री अवनी सबलोक, अनुसंधान सहयोगी और सोशल मीडिया समन्वयक, ने, परिषद का प्रतिनिधित्व किया और सम्मेलन के विषय पर उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हाल ही में, नारीवादी विदेश नीति (एफपीपी) की अवधारणा ने अकादमिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में बढ़ती हुई रुचि प्राप्त की है और भारत ने अपने जी20 अध्यक्षता के दौरान '#NariShakti' द्वारा सक्रिए होकर 'महिला विकास' से 'महिला– नेतृत्व वाले विकास' पर ध्यान दे कर 'लिंग– संवेदी लेंस' को पुनःसमायोजित किया है।

डॉ. एस्तेर फिट्ज़पैट्रिक, ऑकलैंड यूनिवर्सिटी, न्यूज़ीलैंड और डॉ. सिमी मेहता, पीएचडी, सीईओ और संपादकीय निदेशक आईएमपीआरआई इम्पैक्ट एंड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट, सम्मेलन के मुख्य वक्ता थे। डॉ. अनुराधा चेनॉय, रूस एवं मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) और सुश्री अंबिका विश्वनाथ, सह– संस्थापक, कुबेरनेन पहल, मैत्री फेलो, सम्मेलन विषय पर तकनीकी सत्रों के वक्ता थे।

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, चेरी– मनातु, रांची, झारखंड के सामाजिक विज्ञान स्कूल के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 19–20 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने 19—20 मार्च 2025 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का विषय था 'भारतीय त्रान परंपराएं और सतत संपर्क विज़नः क्षेत्रीय एकीकरण और विकास हेतु दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया'।

उद्घाटन भाषण राजदूत अशोक सज्जनहार ने दिया और अध्यक्षीय भाषण झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने दिया। मुख्य भाषण मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, विकास एन्क्लेव, नई दिल्ली (एमएकेएआईएएस, कोलकाता प्रतिनिधि) के वरिष्ठ शोध सहयोगी डॉ. राजीव नयन ने दिया और रांची विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अजीत कुमार सिन्हा ने विशेष भाषण दिया। आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधि, डॉ. समता मल्लेमपति, शोध अध्येता ने अभिनंदन भाषण दिया।

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में दक्षिण और दक्षिण– पूर्व एशिया में कनेक्टिविटी के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया। विभिन्न सत्रों में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ– साथ श्रीलंका और जापान जैसे देशों के संकाय सदस्यों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। कोलकाता के संस्कृत कॉलेज और विश्वविद्यालय के कुलपति एवं पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर महिला विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, प्रोफेसर राजकुमार कोठारी एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ में अंतरराष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र के प्रोफेसर स्वर्ण सिंह ने भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता पर प्रस्तुति दी। युवा विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने हेतु मुख्य पैनल चर्चा के साथ– साथ समानांतर सत्र भी आयोजित किए गए।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के गांधीवादी एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, आईआईसी, नई दिल्ली, 19–20 मार्च 2025

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के गांधीवादी एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा 19–20 मार्च 2025 को भारतीय अंतरराष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में 'भारत की उभरती सॉफ्ट पावरः रणनीतिक आयाम और वैश्विक पहुँच' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्तीय मदद दी गई। संगोष्ठी में परिषद का प्रतिनिधित्व वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. अथर ज़फर ने किया।

उद्घाटन सत्र में सांसद श्री रादा मोहन सिंह मुख्य अतिथि थे जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू), बिहार के कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव ने की। मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए, नई दिल्ली थे। जबकि पंडित

बिरजू महाराज कथक संस्थान, लखनऊ की अध्यक्ष प्रोफेसर कुमकुम धर ने विशेष अतिथि के रूप में सभा को संबोधित किया। सीएसआईआर के अध्यक्ष, प्रोफेसर अश्विनी महापात्रा, पूर्व डीन, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली ने अपने विचार व्यक्त किए। आईसीडब्ल्यूए के प्रतिनिधि डॉ. अथर ज़फर ने आईसीडब्ल्यूए और इसकी शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में बताया।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव, वीसी, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार ने की। विशिष्ट अतिथि राजदूत राज कुमार श्रीवास्तव, डीन, सुषमा स्वराज इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन सर्विस, नईदिल्ली थे। सम्मानित अतिथि प्रोफेसर मज़हर आसिफ, कुलपति, जामिया, मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली थे और सीएसआईआर प्रतिनिधि डॉ. अभिषेक श्रीवास्तव, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली थे। सेमिनार के संयोजक एमजीसीयू, बिहार के डॉ. असलम खान थे।

इस दो दिवसीय विचार– विमर्श में अलग– अलग सत्रों में विभिन्न विषयों पर अलग– अलग मुद्दों को शामिल किया गया था: ‘भारत की वैश्विक पहुँचः बहुपक्षीय जुड़ाव का नया युग’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर का दार्शनिक और वैचारिक आधार’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर कूटनीति: चुनौतियां और अवसर’, ‘नई विश्व व्यवस्था में भारत की सॉफ्ट पावर’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति में प्रमुख एजेंसियां और संस्थागत ढांचा’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर: वैश्विक पदचिन्ह’, ‘सॉफ्ट पावर अभियान: भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के साधन और प्रभाव’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर के पाठ और साधन’, ‘भारत के सॉफ्ट पावर में नए क्षितिज़: उभरते साधन और रुझान’, 'सॉफ्ट पावर असेट के रूप में भारतीय प्रवासी’, ‘क्षेत्रीय कूटनीति: क्षेत्रीय देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना’, ‘भारत की सॉफ्ट पावर में सार्वजनिक कूटनीति और संचार’, ‘भारत से सॉफ्ट पावर प्रभाव के लिए बहुपक्षीय संस्थाओं का लाभ उठाना’, और ‘सार्वजनिक कूटनीति रणनीति और डिजाइन’। इस सेमिनार में भारत और विदेश के विभिन्न हिस्सों से अलग– अलग संस्थानों के विद्वानों ने भाग लिया।

शैलेंद्र एजुकेशन सोसायटी के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, शैलेंद्र नगर, शैलेंद्र विद्यालय मार्ग, दहिसर (पूर्व), मुंबई द्वारा मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई में एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 20 मार्च 2025

मुंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध शैलेंद्र एजुकेशन सोसायटी के कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय ने आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से आईसीडब्ल्यूए की सम्मेलन अनुदान योजना की मदद से 20 मार्च 2025 को मुंबई विश्वविद्यालय के कलिना परिसर में नागरिक शास्त्र एवं राजनीति विभाग, फिरोज़शाह मेहता भवन में ‘उभरती विश्व व्यवस्था: भारत– अमेरिका’ विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। आईसीडब्ल्यूए के निदेशक श्री हितेश राजपाल ने विशेष संबोधन दिया और बदलती विश्व व्यवस्था के प्रमुख पहलुओं, भू– राजनीतिक बदलावों के बीच भारत की बढ़ती भूमिका, अमेरिका की भूमिका, विकसित होती भारत– अमेरिका साझेदारी, चुनौतियों एवं अवसरों के

साथ– साथ भविष्य की राह के बारे में बात की। स्वागत भाषण शैलेंद्र कॉलेद, मुंबई की प्रिंसिपल (डॉ.) स्वाति पितले ने दिया और मुख्य भाषण जेएनयू की कुलपति प्रो. शांतिश्री पंडित ने दिया। उद्घाटन सत्र के बाद आठ तकनीकी सत्र हुए और समापन सत्र के साथ सम्मेलन का समापन हुआ जिसे सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के इमेरिटस प्रोफेसर शेषाद्रि चारी ने संबोधित किया और एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर दिलीप मोहिते ने अध्यक्षता की।

राजनीति विज्ञान विभाग, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, डिब्रूगढ़ असम, 21 मार्च 2025

आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़, असम ने 21 मार्च 2025 को 'भारत के कूटनीतिक पुनर्जागरणः प्रगति और संभावना' पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। आईसीडब्ल्यूए में रिसर्च एसोसिएट केशव वर्मा ने सम्मेलन में परिषद का प्रतिनिधित्व किया, जो आईसीडब्ल्यूए के यूनिवर्सिटी आउटरीच प्रोग्राम का हिस्सा था। अपने संबोधन के दौरान, केशव वर्मा ने आईसीडब्ल्यूए की विरासत पर चर्चा की और भारत के कूटनीतिक परिवर्तन पर प्रकाश डाला, इसकी मुखर विदेश नीति, क्षेत्रीय सहयोग एवं बढ़ते वैश्विक प्रभाव पर ज़ोर दिया।

थनताई पेरियार गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज (स्वायत्त), तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु, द्वारा एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 21 मार्च 2025

भारत– अफ्रीका साझेदारी: सतत आर्थिक और व्यावसायिक विकास की दिशा में उपलब्धियां और अवसर, विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 21 मार्च 2025 को थनताई पेरियार ऑडिटोरियम में आयोजित की गई। आईसीडब्ल्यूए, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित, इस कार्यक्रम का आयोजन वाणिज्य के पीजी और अनुंसाधन विभाग, थनताई परियार सरकारी कला और विज्ञान महाविद्यालय, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु द्वारा किया गया था। इस सेमिनार में भारत और अफ्रीका के बीच विकसित होती साझेदारी पर विचार– विमर्श करने हेतु विद्वान, शोधकर्ता, शिक्षाविद और उद्योग विशेषज्ञ एकत्रित हुए।

स्वागत भाषण वाणिज्य विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख डॉ. वी. सरोजा ने दिया। इसके बाद, आयोजन सचिव और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सी. परमशिवन ने विषयगत टिप्पणी दी। आईसीडब्ल्यूए के रिसर्च फेलो डॉ. अरशद ने परिषद का प्रतिनिधित्व किया और सभा को संबोधित किया। कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. के. वासुदेवन ने अध्यक्षीय भाषण दिया और अंतरराष्ट्रीय संबंधों और टिकाऊ व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देने में शिक्षाविदों की भूमिका पर ज़ोर दिया।

अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विभाग, एस. के. सोमैया कॉलेज, सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, 27 मार्च 2025

भारतीय वैश्विक परिषद के सहयोग से, सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुंबई ने 27 मार्च 2025 को ' भारत– अफ्रीका विकास साझेदारीः निरंतर भविष्य की कल्पना, बढ़ता लगाव', विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में भारत और अफ्रीका के विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, नीति निर्माता भारत– अफ्रीका विकास सहयोग के तौर– तरीकों और उभरती सीमाओं पर चर्चा और बहस करने के लिए एकत्रित हुए। डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान ने सम्मेलन में आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने सम्मेलन के विषय पर बात की, जिसमें अफ्रीका के विकास और वृद्धि के विरोधाभास पर प्रकाश डाला गया और बताया गया कि किस प्रकार भारत की अफ्रीका के साथ साझेदारी अफ्रीका के एजेंडा 2063 के साथ संरेखित है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनकी साझेदारी का

उद्देश्य सतत विकास के साझा लक्ष्यों को प्राप्त करना और बदलती भू– राजनीतिक गतिशीलता के बीच दोनों क्षेत्रों के लिए अवसर पैदा करना है।

राजदूत टी पी श्रीनिवासन, कुलपति प्रो वी एन राजशेखरम पिल्लई, कुलपति, प्रो गुलशन सचदेवा, मुख्य समन्वयक दक्षिण और डॉ. दिनोज उपाध्याय ने मुख्य भाषण और विषय– आधारित भाषण दिया।

डॉ. निवेदिता रे ने 28 मार्च 2023 को सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय में आयोजित 'भारतीय विदेश नीति की रूपरेखा' विषय पर युवा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भी भाग लिया। उन्होंने भारत की विदेश नीति के नज़रिए और भारत की विदेश नीति को आकार देने और प्रभावित करने में युवाओं के दृष्टिकोण की महत्वपूर्ण भूमिका पर बात की।

राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़हलगंज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 26–27 मार्च 2025

26-27 मार्च 2025 को आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़हलगंज, गोरखपुर द्वारा "हाल के समय में भारत– बांग्लादेश संबंधः चुनौतियां और संभावनाएं" शीर्षक से हिंदी में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक आईजीएनटीयू के पूर्व कुलपति प्रो. श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी थे। सेमिनार में परिषद का प्रतिनिधित्व डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य, आरएफ ने किया। उन्होंने बांग्लादेश में हाल की अस्थिरता, उसके आंतरिक राजनीतिक और आर्थिक

धटनाक्रम, द्विपक्षीय संबंधों पर उनके प्रभाव और भविष्य की राह पर छात्रों को संबोधित किया। प्रो. श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी, पूर्व कुलपति, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक ने मुख्य भाषण दिया।

देशकाल सोसायटी और डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर द्वारा डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 29–30 मार्च 2025

देशकाल सोसायटी द्वारा डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर के साथ मिलकर आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 29 और 30 मार्च 2025 को नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में 'बोधगया ग्लोबल डायलॉग्स 2025 का सातवां संस्करण' नाम की दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में महामहिम मेजर जनरल वेटसॉप नामग्याल, राजदूत, रॉयल भूटानी दूतावास, नई दिल्ली; डॉ. डीएम मुले, लेखक, राजनयिक और भारत सरकार के पूर्व सचिव; और राजदूत संजय कुमार वर्मा, अध्यक्ष, आरआईएस, नई दिल्ली उपस्थित थे। पहले दिन तीन सत्र आयोजित किए गए, जिनके विषय थे– बौद्ध दर्शन और बौद्ध धर्म की शिक्षा, बौद्ध सर्किट की परिकल्पनाः स्थानीयता, विरासत निर्माण और स्थिरता एवं बौद्ध स्मारक, विरासत और उससे परे।

इसके बाद सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। दूसरे दिन की शुरुआत भारत– वियतनाम संबंधः बौद्ध धर्म के संबंध की खोज और निर्माण और सहयोग के उभरते क्षेत्र विषय पर विशेष सत्र से हुई। इस सत्र की अध्यक्षता हंगरी, नेपाल और वियतनाम में भारत के पूर्व राजदूत राजदूत रंजीत राय ने की। डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य, आरएफ, आईसीडब्ल्यूए ने 'भारत की कूटनीतिक संस्कृति के स्तंभ के रूप में बौद्ध धर्म को वापस लानाः सहयोग के नए रास्ते बनाना' शीर्षक से एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। सत्र के बाद फिल्म स्क्रीनिंग, पुस्तक चर्चा और वार्तालाप का आयोजन किया गया। समापन भाषण आईजीएनसीए, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय ने दिया।

परिषद में शोध-प्रशिक्षु

एडुला वर्षिता

पॉन्डिचेरी विश्वविद्यालय

ऐश्वर्या उप्रेती

राजस्थान विश्वविद्यालय

सौम्यसिंह क्षत्रिय

पॉन्डिचेरी विश्वविद्यालय

नंदिनी खंडेलवाल

पॉन्डिचेरी विश्वविद्यालय

फरहान खान

जामिया मिलिया इस्लामिया

अदिति मिश्रा

एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा

जूलिया जोस थैचिल

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ गुजरात

रितिका मौर्या

पंडित दीनदयाल ऊर्जा विश्वविद्यालय, गांधीनगर

सुगंधी

जामिया मिलिया इस्लामिया

मृत्युंजय गोस्वामी

जिंदल स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स

सुश्री ऐश्वर्या जिंदे

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

सुश्री मनस्विता

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

सुश्री मोन्या सुदर्शनम

मोनाश यूनिवर्सिटी

भारतीय वैश्विक परिषद प्रकाशन

मुद्दा संक्षिप्त

1. डोनाल्ड ट्रम्प 2.0 में क्रॉस– स्ट्रेट संबंध, डॉ. तेशु सिंह| 27 फरवरी 2025
2. असद के बाद सीरिया में शासन गठनः संभावनाएं और चुनौतियां, डॉ. अरशद | 19 फरवरी 2025
3. इराक में चुनावी लोकतंत्र के दो दशकः एक आकलन, फरहान खान | 18 फरवरी 2025
4. उत्तर याद रखेगाः डीपसीक और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से जुड़े बड़े सवाल, अनुभा गुप्ता | 17 फरवरी 2025
5. असद का निष्कासनः सीरिया में अभी क्यों और आगे क्या होगा, डॉ. फज्जुर रहमान | 12 फरवरी 2025
6. पनामा नहर पर प्रतिस्पर्धा– उभरता भू– राजनीतिक फ्लैशप्वाइंट, अर्नब चक्रवर्ती | 10 फरवरी 2025
7. भारत– म्यांमार सीमा पर नार्को– तस्करी और भारत की सुरक्षा पर इसके प्रभाव, बार्बी बसुमतारी | 10 फरवरी 2025
8. मोरक्को का भारत आउटरीचः रक्षा उद्योग सहयोग की संभावनाएं, मुकेश कुमार | 06 फरवरी 2025
9. पश्चिम अफ्रीका में जेएनआईएम का बढ़ता प्रबावः बेनिन, टोगो और घाना के लिए खतरा, इंगले उत्कर्ष अजय | 06 फरवरी 2025
10. सऊदी अरब की एनईओएम परियोजना के सात वर्ष: संभावनाएं और चुनौतियां, सुगंधी | 24 जनवरी 2025
11. क्वाड के बीस वर्षः हिंद– प्रशांत में सहयोग निर्माण, डॉ. स्तुति बनर्जी | 20 जनवरी 2025
12. संयुक्त राष्ट्र साइबर अपराध संधिः वह वर्ष जब साइबर और बहुपक्षवाद ने सबका ध्यान आकर्षित किया, अनुभा गुप्ता | 14 जनवरी 2025
13. चीन के सुदूर जल बेड़े द्वारा लैटिन अमेरिकी जलक्षेत्र में अवैध, अघोषित और अनियमित मछली पकड़ना– चिंताएं, डॉ. अर्नब चक्रवर्ती | 07 जनवरी 2025
14. इज़रायल– हमास युद्ध में राजनीतिक नेतृत्व के लिए आईसीसी के गिरफ्तारी वारंट को समझना, डॉ. अरशद | 07 जनवरी 2025

दृष्टिकोण

1. रुस की अस्पष्ट दक्षिण की ओर परमाणु भागीदारी, डॉ. श्रीपति नारायणन | 12 मार्च 2025
2. एमएएस में दरारें– बोलीविया का बदलता राजनीतिक परिदृश्य, डॉ. अर्नब चक्रवर्ती | 12 मार्च 2025
3. तालिबान अधिकारियों ने जापान का पहला राजनयिक दौरा किया, डॉ. अन्वेषा घोष | 28 फरवरी 2025

4. सीरिया में नई व्यवस्था के साथ कैसे जुड़ रहा है रूस?, अमन कुमार | 20 फरवरी 2025

5. गैस और राजनीतिः यूरोप को अमेरिकी एलएनजी निर्यात, सौम्यसिंह क्षत्रिय | 20 फरवरी 2025

6. आसियान में ब्रिक्स का विस्तार और इंडोनेशिया का प्रवेश, डॉ. मेहदी हुसैन | 19 फरवरी 2025

7. शी जिनपिंग का मकाऊ दौरा | 18 फरवरी 2025

8. 2021 में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट और भारत– म्यांमार सीमा क्षेत्र पर इसका प्रभाव, लेइवन विक्टर लामकांग | 07 फरवरी 2025

9. भारत के विकास और सुरक्षा ढांचे में अरुणाचल प्रदेश को प्रासंगिक बनाना, बेंगिया मेरो | 07 फरवरी 2025

10. रूस के तेल पर अमेरिकी प्रतिबंध: व्यापार गतिशीलता और वैश्विक ऊर्जा बाजारों पर प्रभाव का आकलन, अरविंदन जी | 06 फरवरी 2025

11. एयरो इंडिया कार्यक्रमः भारत की रक्षा निर्यात महत्वकांक्षाओं को बढ़ावा देने के लिए एयरोस्पेस को उत्प्रेरित करना, लिपुन कुमार संबाद | 06 फरवरी 2025

12. इसरो ने सैटेलाइट डॉकिंग प्रयोग को सफलतापूर्वक पूरा किया, केशव वर्मा | 28 जनवरी 2025

13. साहेल राष्ट्रों के गठबंधन के साथ रूस की बढ़ती भागीदारी, जूलिया जोस थैचिल | 22 जनवरी 2025

14. लहर में आइवरी कोस्ट भी शामिल: फ्रैंकोफोन अफ्रीका में घटता फ्रांसीसी प्रभाव, नंदिनी खंडेलवाल| 20 जनवरी 2025

15. भारत के विदेश सचिव ने द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा के लिए अफ़गानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री से मुलाकात की, डॉ. अन्वेषा घोष | 16 जनवरी 2025

16. मलेशिया के नियंत्रण में आसियान और 2025, डॉ. श्रीपति नारायणन | 14 जनवरी 2025

17. भूख और गरीबी के खिलाफ वैश्विक गठबंधन को आगे बढ़ाना, अदिति मिश्रा | 13 जनवरी 2025

18. किर्गिज़– ताजिक सीमा समझौते का स्वरूप, डॉ. पुनीत गौर | 07 जनवरी 2025

19. मध्य एशियाई देशों की ब्रिक्स के साथ मुलाकात, डॉ. अतहर ज़फर | 06 जनवरी 2025

भारतीय वैश्विक परिषद अतिथि कॉलम

1. 'म्यांमार शांति प्रक्रिया में मीडिया का प्रभाव', लेफ्टिनेंट जनरल मिन नैंग, सचिव, राष्ट्रीय एकजुटता और शांति– निर्माण वार्ता समिति, म्यांमार | 08 फरवरी 2025

2. 'सिंधु जल संधि को 'संशोधित' करने के लिए पाकिस्तान को भारत का नोटिसः कारण और निहितार्थ', डॉ. श्रावण बरुआ | 06 फरवरी 2025

विशेष रिपोर्ट

1. यूक्रेन युद्ध के तीन वर्षः वर्तमान स्थिति और अंतरराष्ट्रीय शांति मध्यस्थता प्रयासों का अवलोकन, डॉ. हिमानी पंत और अमन कुमार | 04 मार्च 2025
2. भारत– वियतनाम सभ्यतागत संबंधः अतीत और वर्तमान के कलिंग और चाम को याद करना, डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य | 18 फरवरी 2025
3. भारत– सिंगापुर सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखलाः पूरक और लचीचा, डॉ. मेहदी हुसैन | 18 फरवरी 2025
4. विक्टर ओरबान के विचारों और राजनीति में, अमन कुमार | 18 फरवरी 2025
5. भारत– लैटिन अमेरिका परमाणु सहयोग, गिरिसंकर एसबी SB | 18 फरवरी 2025
6. छोटे खाड़ी देशों की बदलती विदेश नीतिः कुवैत की एक केस स्टडी, डॉ. लक्ष्मी प्रिया | 13 फरवरी 2025

भारतीय वैश्विक परिषद् पुस्तकें

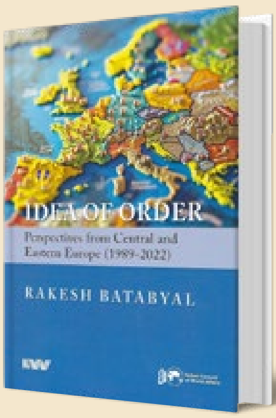

Idea of Order: Perspectives from Central and Eastern Europe (1989–2022)

By Rakesh Batabyal

(Indian Council of World Affairs; KW Publishers, 2025)

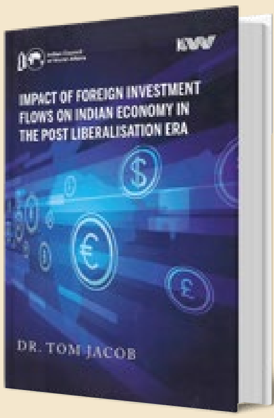

Impact of Foreign Investment Flows on Indian Economy in the Post Liberalisation Era

By Dr. Tom Jacob

(Indian Council of World Affairs; KW Publishers, 2025)

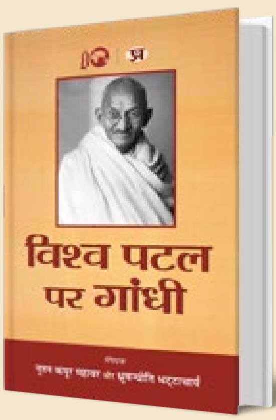

विश्व पटल पर गांधी

नूतन कपूर माहवर और ध्रुब्ज्योती भट्टाचार्य, संपादक
(भारतीय वैश्विक परिषद; प्रभात प्रकाशन, 2025)

विशेष प्रकाशन

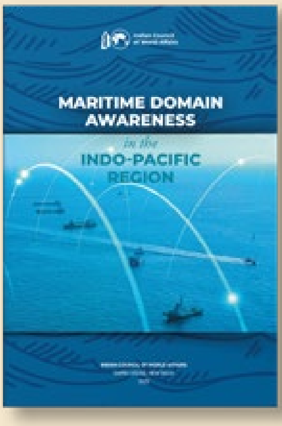

Maritime Domain Awareness in the Indo-Pacific Region

By Dr. Sripathi Narayanan, Captain Sarabjeet S Parmar (Retd), Mr. Abhijit Singh, Cdr. (Dr.) Arnab Das, Dr. Vijay Sakhuja and Mr. Keshav Verma

(Indian Council of World Affairs)

इण्डिया क्वार्टरली, ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स
खंड 81, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

संपादकीय

आने वाले दिनों में बेहतरी की उम्मीद के साथ नए साल का जश्न मनाना एक वार्षिक अनुष्ठान है। सरकारें नागरिकों को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के वादे के साथ उत्पादक गतिविधियों को जारी रखने के लिए तत्पर रहती हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठन तेज़ी से युद्ध का समाधान और राष्ट्रों के बीच सहकारी संबंधों को बढ़ावा देने की उम्मीद जताते हैं। लेकिन जैसे– जैसे हम 2025 में प्रवेश कर रहे हैं, यूरोप और पश्चिम एशिया में युद्धों से समय रहते कोई समाधान नहीं निकल रहा है। वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था में सुधार के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। भारी कर्ज़ के बोझ से जूझ रहे ग्लोबल साउथ के देशों को उचित राहत मिलने की बहुत कम उम्मीद है।

अमेरिकी मतदाताओं ने डोनाल्ड ट्रंप को अपने 47वें राष्ट्रपति के रूप में भारी बहुमत से चुना, जिससे वाशिंगटन, डी.सी. में सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण सुनिश्चित हो सका। हालांकि अमेरिकी मतदाताओं के इस फैसले ने विश्व के लिए कई अनिश्चितताएं पैदा कर दीं। एक तरह से, अमेरिकी राष्ट्रपति पद कम– से– कम चार वर्ष तक बड़ी शक्तियों के संबंधों की दिशा के बैरोमीटर की तरह काम करता है। ट्रम्प के व्हाइट हाउस में वापसी के साथ ही ऐसा लग रहा है कि ट्रम्प 2.0 प्रशासन के दौरान अमेरिकी सहयोगियों और विरोधियों को चार वर्षों तक अनिश्चितता एवं अप्रत्याशितता का सामना करना पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक संघर्ष का भविष्य अब सवालों के घेरे में है। अमेरिका के यूरोपीय सहयोगियों को राष्ट्रपति ट्रंप ने पनामा पर अमेरिकी नियंत्रण बहाल करने और डेनमार्क से ग्रीनलैंड खरीदने के बयानों से नाटो की लचीलापन के लिए जोखिम का संकेत मिल गया है। मैक्सिको की खाड़ी का नाम बदलने की ट्रंप की इच्छा और कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बनाने के विचार से उत्तरी अमेरिका की स्थिरता पहले से ही बाधित है। चीन ने टैरिफ मुद्दे पर ट्रम्प 2.0 प्रशासन का सामना करने की तैयारी शुरू कर दी है।

समृद्धि के लिए हिंद– प्रशांत आर्थिक ढांचे (आईपीईएफ) की स्थायित्व भी संदिग्ध है। गाज़ा में हमास, लेबनान में हिज़्बुल्लाह के खिलाफ इज़रायली युद्ध, शासन परिवर्तन के बाद सीरिया पर बमबारी और ईरान के साथ तेल अवीव के सीमित मिसाइल आदान– प्रदान ने पहले ही पश्चिम एशिया और फारस की खाड़ी क्षेत्र के भू– राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया है। लाल सागर में शांतिपूर्ण शिपिंग के लिए यमनी हूतियों द्वारा पेश की गई चुनौतियां उनके ठिकानों और शिविरों पर बार– बार मिसाइल हमलों के बावजूद बनी हुई हैं।

सभी संकेत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं कि वर्ष 2025 खुली बातचीत और पिछले दरवाजे से सौदेबाजी के माध्यम से सशस्त्र युद्धों

को समाप्त करने के लिए लगातार प्रयासों का एक और वर्ष होने जा रहा है। बहुपक्षवाद के माध्यम से बहुध्रुवीय विश्व को मजबूत करने की दिशा में प्रयास जारी रहेंगे, जबकि ट्रम्प 2.0 प्रशासन अमेरिका को विश्व मामलों में एक प्रमुख अभिनेता बनाने का प्रयास कर रहा है।

पत्रिका के वर्तमान अंक में जलवायु परिवर्तन के जटिल मुद्दों पर एक मुख्य लेख है, जिसमें जलवायु शरणार्थियों की दुर्दशा और पर्यावरणीय कारकों के कारण लोगों के लचीलेपन के हितों की रक्षा के लिए नए कानूनी रूपरेखा की जरूरत पर प्रकाश डाला गया है। पश्चिम एशियाई भू– राजनीति की निरंतर अस्थिरता को देखते हुए, जो वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा को कई तरह से प्रभावित करती है, इस अंक में एक लेख क्षेत्रीय मध्य शक्तियों की भूमिका का विश्लेषण करता है जो एक अशांत पारिस्थितिकी तंत्र को नेविगेट करने के लिए है, जहाँ बाहरी शक्तियां परंपरागत खिलाड़ी हैं। ईरान विदेश नीति पर एक समीक्षा निबंध शामिल किया गया है। यह ईरानी शासकों पर घरेलू चुनौतियों और बाहरी दबावों को समझाता है जो इन जटिलताओं से चतुराई से निपटने की कोशिश करते हैं।

बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था की दिशा में काम करने और एकतरफावाद का विरोध करने वाले अंतरराष्ट्रीय समूहों में से एक ब्रिक्स रहा है। ब्रिक्स की सदस्यता में असाधारण वृद्धि हुई है और आने वाले वर्षों में पश्चिम– प्रभुत्व वाली वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था के साथ इसके संभावित मतभेद और भी गहरे होने की संभावना है। इस अंक के एक आलेख में वैश्विक कृषि परिदृश्य में ब्रिक्स की भूमिका की व्याख्या की गई है और ब्रिक्स देशों की कृषि प्रथाओं के निहितार्थों का विश्लेषण किया गया है।

इस समय अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान यूक्रेन युद्ध और उसके परिणामों और पश्चिम एशियाई क्षेत्र में रणनीतिक उथल– पुथल पर केंद्रित है, लेकिन आतंकवाद समाज को खतरे में डालने और शांति को बाधित करने के लिए बना हुआ है। आईएसआईएस से जुड़े एक नामित आतंकवादी नेटवर्क एचटीएस की सीरिया में असद शासन को उखाड़ फेंकने की क्षमता ने खतरे की घंटी बजा दी है। वास्तव में, डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में आईएसआईएस पर जीत की घोषणा की थी। यह वैश्विक आतंकवादी संगठन फिलहाल कमज़ोर है लेकिन खत्म नहीं हुआ है। अफ़गानिस्तान में तालिबान की सत्ता में वापसी और उसके शासन का मजबूत होना इस बात का संकेत है कि दक्षिण– पश्चिम एशिया में आईएसआईएस की मौजूदगी और बढ़ सकती है।

अफ़गानिस्तान पर लेख तालिबान शासन के तहत शासन संरचना और उस देश में आम लोगों के विचारों और अपेक्षाओं के बारे में है। एक और लेख म्यांमार में राजनीतिक संकट के बारे में है जिसका न केवल आसियान बल्कि दक्षिण एशिया पर भी प्रभाव पड़ता है। यह जम्मू और कश्मीर में रोहिंग्या शरणार्थियों के निहितार्थ और इसके राष्ट्रीय सुरक्षा निहितार्थों का विश्लेषण करता है।

दुनिया हमेशा परिवर्तनशील अवस्था में रहती है और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने हमेशा बहुत सी चुनौतियां होती हैं जिन्हें समझने और संघर्षों को हल करने और शांति एवं सहयोग को बढ़ावा देने के उपायों का सुझाव देने के लिए विद्वानों के अध्ययन और शोध की आवश्यकता होती है। इंडिया क्वार्टरली उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विद्वानों के लेख प्राप्त करने की आशा करता है।

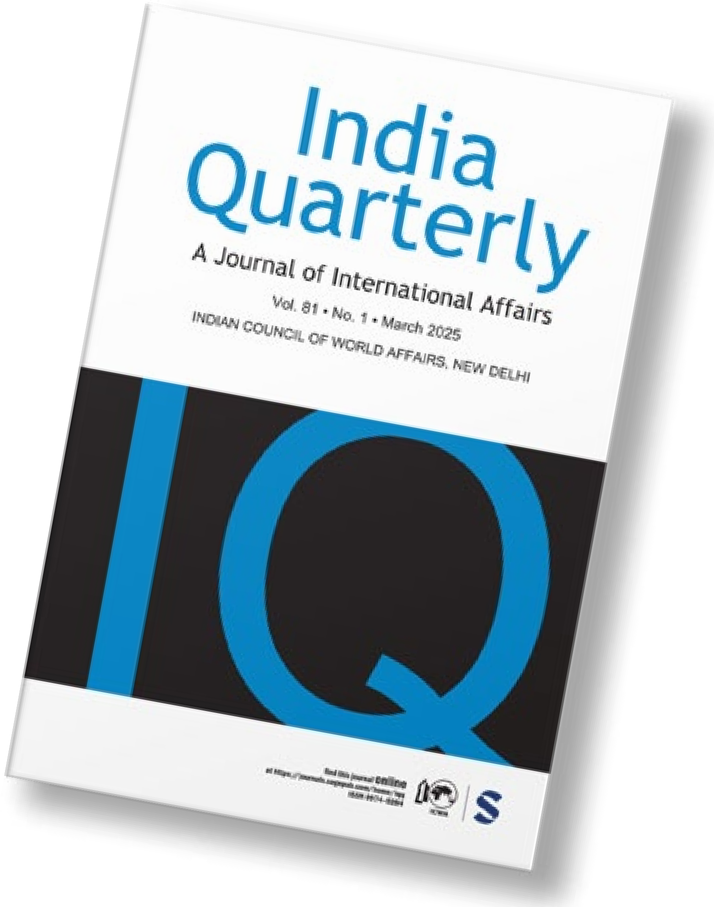

प्रो. चिंतामणि महापात्रा
संपादक, भारत त्रैमासिक

भारतीय वैश्विक परिषद

भारतीय वैश्विक परिषद के बारे में

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। परिषद आज एक आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति शोध करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज परिचर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला नियमित रूप से आयोजित करती है और कई प्रकाशनों का प्रकाशन करती है। इसमें एक बहुत सी पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह 'इंडिया क्वार्टरली' पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए ने अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंकों और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं। परिषद की भारत में अग्रणी शोध संस्थानों, थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों के साथ भी साझेदारी है।

सलाहकार एवं संपादक : श्रीमती नूतन कपूर महावर, अपर सचिव, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली

प्रबंध संपादक : डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली

सहायक संपादक : डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली

हमसे जुड़ें

/Sapru.House

@ICWA_NewDelhi

/ICWA_NewDelhi

www.icwa.in

/company/indian-council-of-world-affairs1

आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रक

वेबसाइट: https://www.icwa.in;
दूरभाष नं 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638